१०·३

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसका सम्बन्ध संसार के सभी देशों से है। इसलिये इस पुस्तक में, उसकी विवेचना किसी देशविशेष की अवस्था को निगाह में रखकर नहीं की गई है वरन् संसार के अधिकांश देशों की जैसी अवस्था है उसी को समष्टि रूप में दृष्टिगोचर रखकर यह पुस्तक लिखी गई है। यदि पाठक इसकी बातों पर केवल भारतवर्ष की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर विचार करेंगे तो उन्हें अनेक स्थानों पर ग़लती का सन्देह होगा। उदाहरण के लिये इसमें कहा गया है कि कारख़ानों में जितने का माल तैयार होता है उसका केवल दस प्रति सैकड़ा मज़दूरी में जाता है। यह हिसाब अमरीका, जर्मनी, जापान आदि देशों के लिये सच समझा जा सकता है जहां कारख़ाने बहुत बड़े आकार में बनाये गये हैं बहुत बड़ी-बड़ी तथा अत्यन्त क़ीमती मशीनों से काम लिया जाता है जो साधारण मशीनों से कई गुना काम कर डालती हैं। इसी प्रकार छठे अध्याय के आरम्भ में लिखा है कि "पूँजीपति अपने धन द्वारा राष्ट्र की व्यवस्थापक और कार्यकारिणी सभाओं के सदस्यों को कर्तव्यच्युत कर देते हैं, न्यायालयों में अपनी इच्छानुसार जज नियुक्त कराते हैं, परिषदों पर प्रभाव डालते हैं, शासनकर्ताओं को मनोनीत करते हैं, और सब से अधिक उल्लेख योग्य बात यह है कि वे देश के समाचारपत्रों पर अधिकार रखते हैं और उनके द्वारा लोगों के दिमाग़ों में विकृत विचार भर कर उनको प्रचलित प्रणाली का दास बना देते हैं।" यह वर्णन भी भारत की अवस्था को देखते हुये अतिशयोक्ति पूर्ण

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान पड़ता है। क्योंकि यहाँ पूँजीवाद अभी इस स्थिति को नहीं पहुँचा है। पर उद्योग-धन्धों की दृष्टि से विशेष उन्नतिशील देशों और विशेषकर अमरीका के लिये यह पूर्णतया सत्य है।

इन बातों को ध्यान में रखते हुये यदि पाठक इस पुस्तक का अवलोकन करेंगे तो वे अवश्य ही साम्यवद के उस मूल तत्व को जान सकेंगे जो केवल आन्दोलन और प्रचार की दृष्टि से लिखी जानेवाली साधारण पुस्तकों सें नहीं जाना जा सकता।

सत्यभक्त

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

अध्याय	पृष्ठ
(१) सामाजिक विकास	१
(२) प्राचीन सामाजिक और आर्थिक प्रणालियां	७
जातिगत कम्यूनिज़्म	७
प्राचीन दासत्व-प्रथा	१२
सामन्त राज्य	१४
(३) पूँजीवाद	१७
पूँजीवाद का उद्देश्य	१८
नाशकारी शक्तियाँ	२३
एकाधिकार (Monopoly)	२४
जाति (Castes)	२६
श्रम को बचानेवाली मशीनें	२८
वैदेशिक व्यवसाय और पूंजीवाद का विस्तार ...	३०
व्यवसाय-संकट	३५
(४) भावी सामाजिक प्रणाली	४०
(५) पूँजीवाद की असमर्थता	४५
क्रमशः सुधार के पक्षपाती	४६
शासक-वर्ग के नष्ट होने के अन्य ऐतिहासिक कारण	४९
(६) साम्यवाद की सफलता	५४
अगर पूँजीपतियों की विजय हुई ? ...	५९
अगर श्रमजीवियों की विजय होगी ? ...	६३
(७) मानवीय प्रकृति और सहयोग	७१
विजय किस दल की हो ?	७२

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आजकल यद्यपि संसार में भोजन-सामग्री और जीवन के लिये आवश्यक अन्य उत्तम चीजों की भरमार हो रही है, तो भी सर्वत्र भयंकर दरिद्रता छाई हुई है। इसका कारण यह है कि वर्तमान सामाजिक प्रणाली उनको बाँटने का अथवा हिस्सा करने का ढङ्ग नहीं जानती। इस समस्या को सुलझाने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय कान्फरेंसें निरन्तर चेष्टा कर रही हैं पर उनको सफलता नहीं मिलती। क्योंकि ये कान्फरेंसें पूँजीपतियों के प्रतिनिधियों की ही होती हैं और इसलिये वे पूँजीवादी प्रणाली को हाथ लगाने का साहस नहीं कर सकतीं। वर्तमान प्रणाली की असमर्थता को सभी देशों के विचारक स्वीकार कर रहे हैं यद्यपि इसके प्रतिकार के उपायों के सम्बन्ध में उनमें मतभेद है। इसके लिये कम्यूनिस्ट और सोशलिस्ट दावे के साथ साम्यवाद के सिद्धान्त को पेश करते हैं। उनकी शक्ति निरन्तर बढ़ती जाती है क्योंकि विज्ञान और तर्क से उन्हीं के मत का अनुमोदन होता है।"

जवाहरलाल नेहरू

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्यवाद के सिद्धान्त

पहला अध्याय

सामाजिक विकास

जो लोग साम्यवाद की असलियत से अनजान हैं वे अक्सर यह सवाल उठाया करते हैं कि यह आन्दोलन न्यायानुकूल है अथवा न्यायविरुद्ध—यह समाज के लिये लाभजनक है अथवा हानिकारक—इसके कारण संसार में शान्ति की स्थापना होगी अथवा अशान्ति फैलेगी, आदि आदि। ऐसे लोग यह नहीं समझते कि साम्यवाद कोई सदाचार अथवा नीति-सम्बन्धी सिद्धान्त नहीं है जिसका उद्देश्य मनुष्यों को धर्मात्मा और सज्जन बनने की शिक्षा देना हो। यह तो एक वैज्ञानिक सिद्धान्त है जिसमें अच्छे और बुरे का प्रश्न उठाना ही निरर्थक है। जिस प्रकार डार्विन के जीव-विकास (Evolution) अथवा न्यूटन के गुरुत्व-आकर्षण (Law of Gravity) के सम्बन्ध में हम यह सवाल नहीं उठा सकते कि वे भले हैं या बुरे—न्याययुक्त हैं अथवा अन्याय-पूर्ण, इसी प्रकार साम्यवाद पर भी भलाई और बुराई की

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
निगाह से बहस करना निरर्थक है। हमको इस विषय में केवल इसी निगाह से विचार करना चाहिये कि वह सच है या झूंठ।

विज्ञान हमको बतलाता है कि किस प्रकार संसार की प्रत्येक वस्तु और प्राणियों का क्रमशः विकास होकर सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। ज्योतिर्विज्ञान से हमको मालूम होता है कि किस प्रकार विश्व-ब्रह्माण्ड के पिण्डों, और सौर लोकों की उत्पत्ति और नाश होता है। भूतत्व-विज्ञान (Geology) से पता लगता है कि किस प्रकार हमारी पृथ्वी प्राणियों के निवास योग्य बनी। जीव-विज्ञान (Biology) बतलाता है कि किस प्रकार धरातल पर प्राणियों की वृद्धि हुई। इसी प्रकार साम्यवाद का उद्देश्य यह विवेचन करना है कि मनुष्य-समाज किन-किन अवस्थाओं में होकर वर्तमान दशा तक पहुंचा है और भविष्य में उसमें कौन से नये परिवर्तनों के होने की सम्भावना है।

डार्विन ने इस बात को भली प्रकार सिद्ध कर दिया है कि सृष्टि में समस्त चैतन्य पदार्थों में परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन होता रहता है और जिनमें ऐसा परिवर्तन नहीं हो सकता वे नष्ट हो जाते हैं। ध्रुव प्रान्तों के समस्त जानवर बिल्कुल सफ़ेद रङ्ग के हैं। इसका कारण यही है कि इनको बर्फ़ से ढके हुये प्रदेश में गुज़ारा करना पड़ता है जहाँ सफ़ेद के सिवा दूसरे रङ्ग के जानवर फ़ौरन दिखलाई पड़ सकते हैं और इसलिये शिकारियों या दूसरे जानवरों के हाथों जल्दी ही मारे जा सकते हैं। पर सफ़ेद रङ्ग वालों को बर्फ़ में छुपने में सुविधा होती है और वे
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपेक्षाकृत कम मारे जाते हैं। इस कारण प्राचीनकाल में वहां पाये जाने वाले दूसरे रङ्गों के जानवरों का धीरे-धीरे नाश हो गया और केवल सफेद रङ्ग वाले ही बच रहे।

अगर किसी कारणवश जीवन-निर्वाह के साधनों में परिवर्तन हो जाय तो प्राणियों को भी उसी के अनुसार बन जाना पड़ता है। उदाहरणार्थ व्हेल मछली के पेट के नीचे अब भी चार छोटी-छोटी टांगें दिखलाई पड़ती हैं। इससे मालूम पड़ता है कि वह किसी समय ज़मीन पर रहने वाला प्राणी था, पर परिस्थिति में पड़ कर उसे समुद्र में रहना पड़ा और उसकी आकृति-प्रकृति वहीं के अनुकूल बन गई। पृथ्वी के विभिन्न स्तरों में पाई जाने वाली प्राणियों की ठठरियों की जाँच करने से जान पड़ता है कि विभिन्न युगों में विभिन्न प्रकार के प्राणी पाये जाते थे। धरातल की दशा में जैसे-जैसे बदलाव होता गया उसी के अनुकूल नई-नई तरह के जानवर उत्पन्न होते गये।

ज़ब हम मनुष्य-समाज के विकास पर विचार करते हैं तो मालूम होता है कि उसमें भी परिस्थिति के अनुसार बदलाव होता रहता है। आधुनिक इतिहास लेखकों ने मानवीय सभ्यता की प्रगति को कई भागों अथवा युगों में बाँटा है। इनमें से प्रत्येक युग के अन्त में एक बड़ी क्रान्ति हुई और उसके पश्चात् समाज का स्वरूप सर्वथा बदल गया। सामाजिक परिवर्तन के इन

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विभिन्न युगों को हम जातिगत कम्यूनिज़्म (Tribal communism) दास-प्रथा (Slavery) और सामन्त-शासन (Feudal system) के युगों के नाम से पुकार सकते हैं। वर्तमान युग कारखानों का युग अथवा मज़दूर-युग है। इन विभिन्न युगों में प्रचलित सामाजिक प्रणालियां उसी प्रकार एक दूसरे से पृथक हैं जिस प्रकार एक युग के प्राणी दूसरे युग के प्राणियों से भिन्न प्रकार के हैं।

वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि जैसे-जैसे पृथ्वी के जलवायु और जीवन-निर्वाह के साधनों में परिवर्तन होता गया है वैसे-वैसे ही पृथ्वी पर रहने वाले प्राणी भी बदलते गये हैं। पर मनुष्य-समाज में किन कारणों से परिवर्तन हुआ इस रहस्य का अन्वेषण सर्वप्रथम साम्यवादियों ने ही किया है। आधुनिक साम्यवाद के आचार्य कार्ल मार्क्स ने ही प्रमाणों द्वारा इस बात को सिद्ध किया है कि दूसरे जानवरों की भांति मनुष्य में भी परिस्थिति के अनुकूल परिवर्तन होता रहता है। इतना ही नहीं मनुष्य के ज्ञान और सामाजिक उन्नति का आधार भी जीवन-निर्वाह के साधनों पर ही है।

जिस प्रकार नीची श्रेणी के प्राणियों और पौधों में परिवर्तन होने का आधार जलवायु पर है उसी प्रकार मनुष्य की सामाजिक दशा में जीवन-निर्वाह के साधनों के बदल जाने से परिवर्तन होता है। अगर आधुनिक मनुष्यों को समस्त नवीन औज़ारों

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और यंत्रों का व्यवहार करने से रोक दिया जाय और उन्हें केवल उनके पूर्वजों के पत्थर के हथियार और औज़ार दे दिये जायें तो दूसरी पीढ़ी में वर्तमान सभ्यता का लोप हो जायगा और मनुष्य उसी जङ्गली अवस्था में पहुंच जायँगे जिसमें वे आज से पचास हज़ार या लाख वर्ष पहले पाये जाते थे। इसके विपरीत यदि घोर जङ्गली मनुष्य को सभ्यता के साधन दे दिये जायँ तो वह थोड़े ही समय में बदलकर आधुनिक ढङ्ग का व्यक्ति बन जाता है। कुछ दिन हुये एक मनुष्यभक्षी जाति के सरदार का पुत्र अमरीका की सबसे बड़ी यूनीवर्सिटी की उच्च परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ था और उसने अन्य परीक्षार्थियों की अपेक्षा विशेष योग्यता का परिचय दिया था। इस जङ्गली ने थोड़े ही वर्षों में अपने को जीवन-निर्वाह की आधुनिक अवस्था के अनुकूल बना लिया।

अब तक जितने प्रकार के सामाजिक संगठनों का पृथ्वी पर आविर्भाव हुआ है उनमें से प्रत्येक अपने युग के जीवन-निर्वाह के साधनों अथवा पैदावार के तरीक़ों के अनुकूल था। पर चूंकि पैदावार के तरीक़ों में क्रमशः परिवर्तन होता ही रहता है इसलिए स्वभावतः ही एक समय ऐसा आया जब कि सामाजिक संगठन पैदावार के तरीक़े के अनुकूल न रहा। ऐसी हालत में जब तक पुरानी सामाजिक-प्रणाली को न बदला जाय विकास की गति रुक जाती है। इसलिये पुरानी सामाजिक प्रणाली को मिटाकर पैदावार के तरीक़ों के अनुकूल नई सामाजिक-प्रणाली

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का आविर्भाव होना अनिवार्य हो जाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये समाज में क्रान्ति की उत्पत्ति होती है।०

पर पैदावार के तरीके बराबर बदलते ही रहते हैं। इसलिये एक के बाद दूसरी सामाजिक प्रणाली अनुपयोगी होती जाती है और क्रान्ति द्वारा नष्ट होती रहती है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा अध्याय

प्राचीन सामाजिक और आर्थिक प्रणालियां

जातिगत कम्यूनिज़्म

जिन सामाजिक प्रणालियों का सप्रमाण विवरण हमको प्राप्त हो सका है उनमें जातिगत साम्यवाद या कम्यूनिज़्म (Tribal communism) सब से अधिक प्राचीन है। इसमें सन्देह नहीं कि किसी युग में मनुष्य जाति सामाजिक-विकास की इससे भी नीची अवस्था में थी, पर हमको उस काल की दशा के सम्बन्ध में कुछ भी पता नहीं है। सामाजिक इतिहास का श्री-गणेश जातिगत या फिर्कों के कम्यूनिज़्म से ही होता है।

फिर्कों के कम्यूनिज़्म के युग में मनुष्य एक समूह में सम्मिलित होकर रहते थे और जमीन पर तमाम फिर्कें का सम्मिलित रूप से अधिकार रहता था। पत्थर की कुल्हाड़ी, तीर-कमान और भाला—ये ही उस जमाने के औजार तथा शस्त्र थे। ये औजार प्रत्येक मनुष्य के अलग अलग होते थे पर इनके द्वारा जो जीवन-निर्वाह की सामग्री प्राप्त की जाती थी वह समस्त फिर्के की समझी जाती थी और उसे एक सम्मिलित भण्डार में रखा जाता था। इस भण्डार में से जिस व्यक्ति को जितनी आवश्यकता होती थी उतनी सामग्री ले लेता था। विवाह-सम्बन्ध भी सामू-

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हिक रूप से होता था और प्रत्येक व्यक्ति फिर्के की प्रत्येक स्त्री का पति होता था। लोगों का तमाम समय जीवन-निर्वाह की सामग्री प्राप्त करने में ही खर्च होता था और इस लिये ज्ञान के प्रचार की कोई सम्भावना न थी। गुलामी का अस्तित्व भी न था क्योंकि कोई मनुष्य अपनी आवश्यकता से अधिक उत्पन्न ही नहीं कर सकता था।

यह सामाजिक प्रणाली, जो उस समय के जीवन-निर्वाह के साधनों के अनुकूल थी, प्रायः एक लाख वर्ष तक जारी रही और यदि पैदावार के तरीकों में परिवर्तन न हो जाता तो वह वर्तमान समय तक भी जारी रह सकती थी। अब भी संसार के कुछ छोटे टापुओं और बीहड़ प्रदेशों में, जहाँ के निवासी परिस्थिति-वश पैदावार के साधनों में उन्नति नहीं कर सके हैं इस सामाजिक प्रणाली का अस्तित्व पाया जाता है।

पाठक जानना चाहेंगे कि वे कौन से नये कारण थे जिनसे जातिगत कम्यूनिज़्म की प्रणाली के बदलने की आवश्यकता उत्पन्न हो गई। वे कारण थे पशुपालन और खेती का आविष्कार। जातिगत कम्यूनिज़्म की सामाजिक प्रणाली इन साधनों के अनुकूल न थी और इसलिये उसे नष्ट होकर नई प्रणाली के लिये स्थान खाली करना पड़ा।

जब मनुष्यों ने अपने भरण-पोषण के लिये खेती और पशुपालन का कार्य आरम्भ किया तो वे इतनी सामग्री उत्पन्न

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करने लगे जो उनकी आवश्यकता से अधिक थी।

अब फ़िर्कों के भण्डार में आनेवाली सामग्री सब की सब ख़र्च हो जाने के बजाय बचने लगी और प्रत्येक व्यक्ति उसमें से अपना हिस्सा माँगने लगा। इसके परिणामस्वरूप कुछ काल में अपनी खेती अलग करने तथा उसकी पैदावार अपने ही घर में रखने की प्रथा प्रचलित हुई। आरम्भ में खेती की ज़मीन का बँटवारा प्रति वर्ष होता था पर जब इसमें असुविधा होने लगी तो बँटवारा स्थायी रूप से कर दिया गया। गेसर नाम के इतिहासलेखक ने लिखा है कि जब वह जर्मनी की अर्द्धसभ्य जातियों में गया तो उसने वहाँ ज़मीन के वार्षिक बँटवारे की प्रथा प्रचलित देखी। पर टैकोटस नामक लेखक ने, जो उसी प्रदेश में डेढ़ सौ वर्ष बाद पहुंचा, ज़मीन के बँटवारे को स्थायी रूप में पाया। इस प्रकार सामुदायिक या पंचायती भूमि निजी जायदाद के रूप में परिणित हो गई।

पुराने ज़माने में जब फ़िर्कों में लड़ाई होती थी तो उनका उद्देश्य केवल शत्रु को मार डालना होता था। उस काल में अगर कोई व्यक्ति शत्रु से किसी प्रकार का लाभ उठा सकता था तो इसका केवल एक ही उपाय था और वह था उसके निर्जीव शरीर को खा जाना। पर जब खेती और पशुपालन की प्रथा चल पड़ी और एक मनुष्य अपनी आवश्यकता से अधिक सामग्री उत्पन्न करने लगा, तो उपरोक्त अवस्था बदल गई। अब शत्रु को

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारकर खाजाने की अपेक्षा अपना दास बनाकर उससे काम कराना अधिक लाभजनक था। यहीं से दुनिया में गुलामी की प्रथा का आविर्भाव हुआ।

जब समस्त भूमि और उसकी पैदावार पर फिर्के का अधिकार था तो कोई मनुष्य सम्पति का स्वामी नहीं हो सकता था। पर जब गुलामी और निजी जायदाद की प्रथा चल पड़ी तो मनुष्यों के लिये यह सम्भव हो गया कि वे भूमि, पशु और गुलामों के रूप में बहुत बड़ी सम्पत्ति इकट्ठा कर सकें। ऐसी दशा में इस बात की आवश्यकता जान पड़ने लगी कि वे मरने के बाद अपना कोई उत्तराधिकारी छोड़ जाय जो उस सम्पत्ति का स्वामी हो। पर सामूहिक विवाह की प्रथा के प्रचलित रहते कोई व्यक्ति अपने बच्चों को नहीं जान सकता था और इसलिए उनको अपना उत्तराधिकारी नहीं बना सकता था। इसलिए पैदावार के तरीके के बदल जाने से विवाह-प्रथा की भी एकदम कायापलट हो गई।

गुलामी और निजी जायदाद का आरम्भ होने के पश्चात् विभिन्न फ़िर्कों में बहुत कुछ व्यापार-व्यवसाय होने लगा। अन्त में अधिक उन्नतिशील फिर्कों ने मिलकर राष्ट्रों की स्थापना की जिससे वे अवनतिशील फिर्कों का सफलतापूर्वक मुकाबला कर सकें।

निजी जायदाद की प्रथा प्रचलित होने से धनवान और गरीब का अन्तर पैदा होने लगा और कुछ ही समय में कुछ लोग बड़े

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सम्पत्तिशाली और कुछ दरिद्र बन गये। ये सम्पत्तिहीन व्यक्ति यद्यपि स्वतंत्र थे पर उनकी दशा दासों से कुछ भी बेहतर न थी। इस दशा में धनवानों और गरीबों के श्रेणी-युद्ध (Class struggle) ने ऐसा भयंकर स्वरूप धारण किया कि नई सामाजिक प्रणाली के नाश की सम्भावना जान पड़ने लगी। अब किसी ऐसी शक्ति की आवश्यकता जान पड़ने लगी जो इस श्रेणी-युद्ध से समाज की रक्षा करे और सम्पत्तिहीन लोगों तथा दासों को दबाकर रखे। इसके फलस्वरूप राज्य का जन्म हुआ जिसने अपनी सैन्यशक्ति से ग़रीबों को अमीरों की सम्पत्ति पर हस्तक्षेप करने से रोक दिया और उनको बन्धन में रखने के लिये कानूनों की सृष्टि की।

अब फिर्कों का केवल नाम ही शेष रह गया था। केन्द्रीय शासन-संस्था में लोग पुराने फिर्कों के नाम से प्रातिनिधि भेजते थे। पर व्यापार-व्यवसाय की वृद्धि होने से लोगों को बार-बार एक स्थान से दूसरे स्थान में रहने के लिये जाना पड़ा और इससे फिर्कों का रहा-सहा संगठन भी नष्ट हो गया। अब केन्द्रीय शासन-सभा में फिर्कें के नाम पर प्रतिनिधि भेजे जाने के बजाय देश के भौगोलिक विभागों के हिसाब से प्रतिनिधियों का चुनाव होने लगा। इस प्रकार क्रान्ति का कार्यक्रम सब प्रकार से पूर्ण हो गया। अब जातिगत कम्यूनिज़्म की प्रणाली का उद्देश्य सिद्ध हो चुका था और वह निरुपयोगी हो गई थी। अब उसके स्थिर रखने से उन्नति की गति का रुक जाना अनिवार्य था। इसलिये

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्वभावतः ही उसका नाश होकर एक ऐसी प्रणाली का जन्म हुआ जो पैदावार के नये तरीकों के अधिक अनुकूल थी। अब जातिगत कम्यूनिज्म का स्थान दास-प्रथा ने लिया।

प्राचीन दासत्व-प्रथा

ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करने पर प्राचीन दासत्व-प्रथा का मूल उद्देश्य सभ्यता को जन्म देना प्रतीत होता है। क्योंकि जब तक मनुष्यों का तमाम समय जीवन-निर्वाह की सामग्री प्राप्त करने में ही खर्च होता था तब तक सभ्यता के प्रसार की कोई आशा न थी। दासत्व-प्रथा के प्रचार से समाज में एक ऐसी श्रेणी उत्पन्न हो गई जो जीवन-निर्वाह की चिन्ता से मुक्त थी और इसलिये अपना समय ज्ञान तथा कला की खोज में लगा सकती थी। चूँकि इस तरह की श्रेणी के उत्पन्न हुये बिना सभ्यता का आविर्भाव असम्भव था इसलिये उस परिस्थिति में दासत्व-प्रथा आवश्यकीय और मानव-समाज की दृष्टि से हित-कारी थी।

इस नई सामाजिक प्रणाली का आविर्भाव होने से उन्नति की गति बड़ी तीव्र हो गई। संसार का सबसे बड़ा व्यवसाय दासों को खरीदना और बेचना ही हो गया। इसके लिये प्रत्येक नगर में बड़े-बड़े बाजार पाये जाते थे जहाँ दास जड़वस्तुओं की भाँति बेचे जाते थे। उस युग के व्यक्तियों को यह प्रथा अवश्य ही सब प्रकार से स्वाभाविक और अनिवार्य जान पड़ती होगी,

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और जिस प्रकार हमारा विश्वास है कि वर्तमान सामाजिक तथा आर्थिक अवस्था सदा इसी प्रकार स्थिर रहेगी उसी प्रकार उन लोगों को भी दासत्व-प्रथा के अमरत्व में विश्वास होगया। पर आर्थिक विकास की गति किसी विशेष प्रणाली के लिये रुक नहीं सकती। इसलिये जिस समय दासत्व-प्रथा पर अवलम्बित प्राचीन सभ्यता उन्नति के शिखर पर पहुंची हुई थी उसी समय अप्रत्यक्ष शक्तियां उसके नाश का आयोजन कर रही थीं।

आरम्भ में शासक-श्रेणी समाज की उन्नति के लिये आवश्यकीय थी। उसने चित्रकारी, संगीत, साहित्य, दर्शन, गणित और अन्य आवश्यकीय विद्याओं का आविष्कार तथा वृद्धि करके सभ्यता को बढ़ाया। पर कुछ समय पश्चात् यह श्रेणी एक जाति के स्वरूप में परिवर्तित हो गई और शासक के पद पर एक ही वंश का एकाधिकार हो गया। इस कारण शासकगण विलासी, अकर्मण्य और भ्रष्ट हो गये और घोर दरिद्रता के पाश में फँस कर उनकी प्रजा का भी पतन हो गया।

पैदावार की वृद्धि के लिये नये औजारों का आविष्कार हुआ, पर शासकवर्ग सामाजिक संगठन में उनके अनुकूल परिवर्तन करने में असमर्थ थे। इस अवस्था में यदि कोई दूसरी श्रेणी शक्तिशालिनी होती तो वह क्रान्ति द्वारा शासन पर अपना अधिकार करके समाज की रक्षा कर सकती थी। पर दूसरे लोगों में न इतनी शक्ति थी और न इसके लायक विद्या और बुद्धि थी। इसलिये समाज दिन पर दिन पतन के गढ़े में गिरने लगा और

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कुछ समय के लिये सर्वत्र अशान्ति, अव्यवस्था और अन्धकार फैल गया।

सामन्त राज्य

दास-साम्राज्यों के छिन्नभिन्न और नष्ट हो जाने पर सब देशों में छोटे-छोटे राज्यों का आविर्भाव हुआ। क्योंकि अव्यवस्था फैलने से जब लोगों ने अपनी स्थिति अरक्षित देखी तो उन्होंने युद्ध-कला में निपुण व्यक्तियों की आधीनता स्वीकार कर ली और ये व्यक्ति अपनी शक्ति के द्वारा तथा अन्य उपायों से शीघ्र ही उनके स्वामी बन बैठे, साधारण जनता इन राजाओं अथवा सरदारों की रक्षा में रहकर खेती बारी अथवा अन्य व्यवसाय करती थी और पैदावार में से कर स्वरूप उनको भी एक भाग देती थी।

इस प्रकार दास-प्रथा की सामाजिक प्रणाली में से सामन्त-राज्य अथवा कृषक-प्रणाली का जन्म हुआ। इसमें व्यक्तियों को कार्य करने की पहले की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता प्राप्त थी और इसलिये शीघ्र ही नई-नई कारीगरियों का आविर्भाव हुआ, श्रम-विभाग की वृद्धि हुई और नये-नये औजारों तथा पैदावार के लाभजनक तरीकों से काम लिया जाने लगा।

आरम्भ में उद्योग-धन्धों का तमाम अधिकार राज्य को ही था। वह कुछ किसानों को कारीगरी सिखला कर उनसे आवश्यकीय कार्य कराता था। पर कुछ समय बाद जब एक काम के

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करने के लिये अनेक प्रकार के कारीगरों के सहयोग की आवश्यकता पड़ने लगी और शिल्पकारी का महत्व बढ़ गया तो इस के लिये छोटे-छोटे संघ बन गये अथवा कुछ नगर केवल कारीगरी का ही काम करने लगे। जब इन वस्तुओं की खपत अधिक बढ़ने लगी और वस्तुओं के बनाने के लिये साधारण मशीनें तैयार हो गईं तो कई व्यक्ति मिलकर कारबार करने लगे अथवा एक व्यक्ति कुछ नवयुवकों को अपना शागिर्द बनाकर एक छोटे कारखाने के रूप में काम करने लगा।

इस परिवर्तन ने आधुनिक कारख़ानों अथवा फैक्टरियों के लिये रास्ता खोल दिया। संघ के मुखिया अथवा उस्ताद को शीघ्र ही मालूम हो गया कि वह कारीगरों को थोड़े वेतन पर नौकर रख कर उनकी बनाई हुई चीज़ें अधिक मूल्य में बेच सकता है। इस उपाय से उसे स्वयं काम करने की भी आवश्यकता न थी। इसके पश्चात् निरन्तर ऐसे आविष्कार होते गये जिनके कारण अकेले व्यक्ति द्वारा किसी चीज़ का सहज में बनाया जा सकना कठिन होगया। विशेषतः नई मशीनें बहुत पेचीदा और क़ीमती थीं और हर एक कारीगर उनको ख़रीद कर नहीं चला सकता था। इसलिए साधारण कारीगरों के लिये यह आवश्यक होगया कि वे किसी ऐसे व्यक्ति के यहाँ मजदूर बनकर काम करें जिसके पास मशीनें हों।

इन कारणों से बड़े-बड़े कल-कारख़ानों का खोला जाना आवश्यकीय हो गया। पर कार्य तब तक सफलतापूर्वक नहीं
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चल सकता था जब तक मजदूरों की संख्या आवश्यकता से अधिक न हो। क्योंकि उसी दशा में वे आपस में प्रतियोगिता करके थोड़ी सी मजदूरी पर काम करने को राजी हो सकते थे। पर जब तक सामन्त-प्रथा प्रचलित थी और अधिकांश जनता उनके आश्रय में रहकर खेतीबारी में लगी हुई थी तबतक इतने मजदूर कहाँ से आते? इस समय यद्यपि पैदावार के तरीक़ों में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया था और पुरानी सामाजिक-प्रणाली उसके लिए अनुकूल न थी पर सामन्तगण अपना स्वार्थ त्याग कर लोगों को कारख़ानों में काम करने की स्वतंत्रता कैसे दे सकते थे?

शासक-श्रेणी ने अपनी शक्ति भर इस बात की पूरी चेष्टा की कि प्राचीन सामाजिक और आर्थिक अवस्था ज्यों की त्यों बनी रहे और लोग पूर्ववत् उनकी प्रजा बने रहकर उनको भूमि-कर दिया करें। पर नवीन व्यवसायी-वर्ग या पूंजीपति उनके विरोधी थे और वे इस बात के लिये उद्योग कर रहे थे कि पुरानी प्रणाली नष्ट होकर लोगों को खेतीबारी से छुट्टी मिल जाये जिससे उनको इच्छानुसार संख्या में मजदूर प्राप्त हो सकें। इन दोनों दलों में कलह होने लगी जिसमें अन्त में व्यवसायी-वर्ग ने सामन्त-वर्ग पर पूर्ण रूप से विजय पाई।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा अध्याय

पूँजीवाद

जब व्यवसायी-वर्ग ने सामन्त-शासन का नाश कर दिया तो उन्होंने समाज का संगठन पैदावार के नये तरीकों के अनुसार किया। इस सामाजिक प्रणाली का उद्देश्य मशीनों द्वारा कारखानों में माल तैयार करने के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करना था। दासत्व-प्रथा के युग में स्वामी अपने गुलामों के शरीर पर अधिकार रखता था और उनका पालन-पोषण करना उसका कर्तव्य समझा जाता था। सामन्त-शासन में भूमि का मालिक राजा या सरदार होता था और किसान को विवश होकर अपने खेत की पैदावार का एक अंश उसे देना पड़ता था और बेगार के रूप में बिना कुछ लिये कभी-कभी उसकी सेवा भी करनी पड़ती थी। अब पूंजीवाद में पूंजीपति मशीनों पर अधिकार रखता है और उनसे बननेवाली तमाम सामग्री को अपने लिये रख कर मजदूर को इतना वेतन देता है जिससे वह जिन्दा रह कर काम करने लायक बना रह सके। इस प्रकार जहां मध्ययुग के मालिक भू-स्वामी थे आधुनिक युग के मालिक मशीनों के स्वामी हैं। अब यद्यपि पैदावार के तरीके के बदल जाने से ग़रीब श्रेणी को शोषण करने का ढङ्ग बदल गया है पर अब भी मालिक और सेवक का अन्तर मौजूद है। गुलामी का स्वरूप बदल गया है पर उसका

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अस्तित्व नष्ट नहीं हुआ है। प्राचीनकाल के दास अपने निर्वाह के लायक सामग्री उत्पन्न करने के साथ ही स्वामी के लिये भी अतिरिक्त सामग्री उत्पन्न करते थे। इसी प्रकार आजकल के कारखानों के मजदूरों को भी अपने और अपने स्वामी दोनों के लिये सामग्री उत्पन्न करनी पड़ती है। इस युग में मशीनों के कारण मजदूरों की उत्पादन शक्ति बहुत अधिक बढ़ गई है और इसलिये मालिकों के लाभ का परिमाण पहले की अपेक्षा बहुत अधिक हो गया है।

पूँजीवाद का उद्देश्य

प्राचीन सामाजिक प्रणालियों की आलोचना करने से हमको विदित हो चुका है कि उनमें से प्रत्येक प्रणाली एक विशेष ऐतिहासिक उद्देश्य (Historic mission) रखती थी और एक विशेष युग में वह मनुष्य जाति के लिये उपयोगी थी। जब उसका उद्देश्य पूर्ण हो गया तो समाज के मूल में काम करनेवाली प्राकृतिक शक्तियों ने उसका नाश कर दिया। इस सिद्धान्त के अनुसार अब हमको पूँजीवाद की प्रणाली के ऐतिहासिक उद्देश्य पर विचार करना है।

जब मशीनों द्वारा माल बनाने की प्रणाली प्रचलित हुई तो जो लोग मशीनों से काम ले सकते थे उनको जान पड़ा कि इस तरीके से वे हाथ से काम करने की अपेक्षा अधिक और सस्ता माल तैयार कर सकते हैं। पर उनके माल की बिक्री तभी सम्भव

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थी जब वे दूसरे लोगों की अपेक्षा अपनी चीजों का दाम कम रखते। चूंकि तैयार माल पर उनकी लागत कम पड़ती थी इसलिये हाथ से काम करनेवाले कारीगरों ने उनकी प्रतियोगिता में शीघ्र ही हार मान ली। उनमें से जो मशीनें खरीदने की सामर्थ्य रखते थे उन्होंने नये तरीके से काम करना आरम्भ किया और शेष कारखानों में मजदूर बन कर काम करने लगे। इस प्रकार हम देखते हैं कि पूँजीवाद के आरम्भ ही से व्यवसाय की बागडोर थोड़े लोगों के हाथ में जाने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई थी।

कुछ ही समय में मशीनों का व्यवहार आम तौर से होने लगा। अब व्यवसाइयों के सामने फिर वही परिस्थिति उत्पन्न हो गई जिसका मुक़ाबला उनको आरम्भ में करना पड़ा था। अन्तर केवल इतना था कि इस समय प्रतियोगिता करनेवालों की संख्या पहले की अपेक्षा कम थी। एक पूँजीपति दूसरे पूँजीपति को व्यव-साय-क्षेत्र से तभी हटा सकता था जब वह उसकी अपेक्षा सस्ता माल बेचता। पर वह सस्ता माल उसी दशा में बेंच सकता था जब कि उसकी लागत में कमी होती। इसके लिये आवश्यकता थी कि वह और भी नई मशीनों से काम लेवे तथा श्रम-विभाग में इस प्रकार उन्नति करे जिससे मजदूर अधिक काम कर सकें। इस प्रकार पूँजीपतियों में थोड़ी मिहनत में ज्यादा माल तैयार करने की होड़ होने लगी।

अब व्यवसाय में सफलता पाने का मुख्य उपाय यही हो गया कि माल तैयार करने की लागत में कमी की जाय और उसे

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरों की अपेक्षा सस्ते भाव में बेचा जाय । जो लोग इस प्रतियोगिता में नहीं ठहर सकते उनको व्यवसाय-क्षेत्र से हट जाना पड़ता है। इस तरह प्रत्येक व्यवसाय में प्रतिद्वन्दियों की संख्या दिन पर दिन घटती जाती है। कार्ल मार्क्स ने अब से अस्सी वर्ष पूर्व इस रहस्य को भलीभाँति समझ लिया था। उसने लिखा था कि व्यवसाय के केन्द्रीभूत होने की यह प्रवृत्ति दिन पर दिन बढ़ती जायगी और अन्त में एक समय ऐसा आयेगा जब एक प्रकार के व्यवसाय का संचालन एक कम्पनी या गुट्ट के हाथ में होगा। इस प्रकार मार्क्स ने आधुनिक काल के ट्रस्टों* के सम्बन्ध में उस समय भविष्यवाणी कर दी थी जब कि लोग प्रतियोगिता को ही व्यवसाय का मूलमंत्र समझते थे । इससे मालूम होता है कि पूँजीवाद का मुख्य उद्देश्य प्रतियोगिता द्वारा मशीनों की उन्नति करना और व्यवसाय को बड़े स्वरूप में केन्द्रीभूत करना है, जिससे अन्त में उसका राष्ट्र या समाज द्वारा संचालन सम्भव हो सके।

---

* अमरीका में मिट्टी के तेल, अनाज, रुई आदि अनेक सामग्रियों के व्यवसाय पर एक ही बड़ी कम्पनी या व्यवसाय-संघ का आधिपत्य है जिनको वहां ट्रस्ट (trust) कहते हैं। दूसरे किसी व्यक्ति की यह सामर्थ्य नहीं होती कि वह इन ट्रस्टों से अलग रह कर स्वतंत्रतापूर्वक उस व्यवसाय को कर सके। क्योंकि इन ट्रस्टों की सम्पत्ति तथा शक्ति असीम होती है और ये प्रतियोगिता तथा अन्य उपायों से अपने प्रतिद्वन्द्वी को मिट्टी में मिला देते हैं। अन्य देशों में इस प्रकार के व्यवसाय-संघ अभी बहुत कम हैं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातिगत कम्यूनिज्म का उद्देश्य (mission) बिखरे हुये व्यक्तियों को एक सामाजिक सूत्र में बाँधना था, ताकि उनमें से यदि कोई जीवन निर्वाह की सामग्री प्राप्त करने का नया साधन प्राप्त करे या कोई नया आविष्कार करे तो उस रहस्य का उसी के साथ अन्त न हो जाय वरन् वह जाति के ज्ञान भण्डार में सम्मिलित हो जाय। जातिगत कम्यूनिज्म ने इस उद्देश्य को पूरा कर दिया और इसके पश्चात् वह अपनी भीतरी शक्तियों द्वारा ही नष्ट हो गया।

प्राचीन दासत्व-प्रथा का उद्देश्य एक ऐसी श्रेणी उत्पन्न करना था जो जीवनानिर्वाह की चिन्ता से मुक्त हो और अपने अवकाश के समय का उपयोग सभ्यता तथा ज्ञान की वृद्धि के लिये कर सके। दासत्व-प्रथा का उद्देश्य भी जब सिद्ध हो गया तो उसी में निहित शक्तियों ने उसका अन्त कर दिया।

सामन्त-शासन का उद्देश्य तरह-तरह के औजारों का आविष्कार और दस्तकारी की वृद्धि करना था जिससे समाज कारखानों की प्रथा के लिये प्रस्तुत हो सके। जब यह उद्देश्य पूरा हो गया तो सामन्त-शासन का भी अन्त हो गया।

पूँजीवाद का ऐतिहासिक उद्देश्य प्रतियोगिता द्वारा सब प्रकार का माल तैयार करने की मशीनों को सर्वाङ्ग-पूर्ण बनाना और अधिक से अधिक श्रम-विभाग करना है जिससे कम से कम परिश्रम में समाज के लिये आवश्यकीय सामग्री तैयार हो सके। उसका दूसरा उद्देश्य संसार के समस्त देशों में पूँजीवाद की

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पद्धति के अनुसार माल तैयार कराना और व्यवसाय को इस प्रकार केन्द्रीभूत कर देना है कि जिससे विजयी श्रमजीवी दल उसका अधिकार अपने हाथ में लेकर सहज ही में उसका संचालन कर सके।

अब पूँजीवाद अपना उद्देश्य पूर्ण कर चुका है। माल तैयार करनेवाली मशीनों की बहुत अधिक उन्नति हो चुकी है और श्रम-विभाग में भी जहां तक सम्भव था सफलता प्राप्त की जा चुकी है। अब मनुष्यों के जीवन-निर्वाह के लिये आवश्यक सामग्री उत्पन्न करना इतना सुगम हो गया है कि यदि प्रत्येक व्यक्ति केवल दो घण्टा प्रतिदिन काम करे तो सब लोग बहुत आराम से रह सकते हैं। संसार के समस्त देशों में अब पूँजीवाद की पद्धति का प्रचार हो गया है। व्यवसायिक-संगठन के स्वरूप की वृद्धि होते-होते वह ट्रस्ट तक जा पहुँचा है जिससे ज़रा भी श्रम व्यर्थ नहीं जाता और थोड़े परिश्रम से बहुत अधिक काम होने लगा है। पूँजीवाद के पास ट्रस्ट से बढ़कर और कोई योजना समाज के सम्मुख पेश करने को नहीं है। ट्रस्टों का निर्माण हो जाने के बाद व्यावसायिक प्रतियोगिता और माल को सस्ता करने के लिये नई मशीनों के उपयोग में लाने की प्रवृत्ति का अन्त हो जाता है। रह गई विभिन्न देशों की व्यापारिक प्रतियोगिता के कारण मशीनों और प्रबन्ध की उन्नति होने की कल्पना, सो उसका भी परिणाम हम अपनी आँखों से देख रहे हैं। इस प्रकार की प्रतियोगिता का अन्त

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र विदेशी माल पर भारी चुङ्गी लगाकर सहज ही में कर सकता है। इसलिये इस दृष्टि से भी अब पूँजीवाद की उपयोगिता नष्ट हो चुकी है। अब किसी भी तरह उसके द्वारा समाज के विकास में सहायता मिलने की कुछ भी आशा नहीं की जा सकती।

नाशकारी शक्तियाँ

हम देख चुके हैं कि प्राचीन आर्थिक प्रणालियाँ जब अपना उद्देश्य पूरा कर चुकी थीं तो उनका नाश करने को उनके ही भीतर कुछ शक्तियाँ उत्पन्न हो गई थीं। इसलिये जब हम कहते हैं कि पूँजीवाद अपना उद्देश्य पूरा कर चुका है तो हमारा कर्तव्य है कि हम उन शक्तियों का भी पता लगायें जो अन्त में उसका नाश करेंगी।

इस सम्बन्ध में अधिकांश लोग बड़े अज्ञान में पड़े दिखलाई देते हैं। वे समझते हैं कि मनुष्य समाज आज जिस रूप में दिखलाई पड़ रहा है उसी में सदा से चला आया है और सदा उसी प्रकार क़ायम रहेगा। यह दशा केवल अशिक्षित और पुराने ख्याल के लोगों की ही नहीं है वरन अच्छी तरह पढ़े लिखे लोग भी प्रचलित प्रणाली को सदा के लिये स्थिर बना देने की कल्पना किया करते हैं। पर साम्यवादी समझते हैं कि इस प्रकार की चेष्टा विकास के नियमों के विरुद्ध और इसलिये सर्वथा निरर्थक है। वे न तो किसी प्रचलित प्रणाली को सदा के लिये स्थिर करना चाहते हैं और न बिना कारण उसे हटाना चाहते हैं। वे केवल यह

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जानने की चेष्टा करते हैं कि विकास की गति किस तरह की है। उनका कार्यक्रम इस गति के अनुकूल चलने का है न कि उसके प्रतिकूल।

एकाधिकार (Monopoly)

हम देख चुके हैं कि किस प्रकार निरन्तर नई-नई मशीनों का आविष्कार होने और छोटे व्यवसाइयों या फर्मों के प्रतियोगिता में न टिक सकने के कारण पूँजी केन्द्रीभूत होती चली जाती है। यह क्रिया तब तक होती रहती है जब तक प्रत्येक व्यवसाय के क्षेत्र में केवल गिनती के कुछ व्यवसायी या फ़र्में बच रहते हैं। तब वे फ़र्में सम्मिलित होकर अपना एक ट्रस्ट बना लेते हैं जिसका उस व्यवसाय पर एकाधिकार हो जाता है। अगर ये फ़र्में सम्मिलित होकर अपना एक गुट्ट न बना लें तो उनकी प्रतिद्वन्दिता उस समय तक चलती रहेगी जब तक सब का नाश होकर केवल एक ही फ़र्म न बच जाय। उस अवस्था में भी अन्तिम परिणाम एकाधिकार या ट्रस्ट ही होगा।

छोटे पूंजीपति या मध्यम श्रेणी के कारखानेवाले चूँकि ट्रस्टों की विशालकाय मशीनों का मुक़ाबला नहीं कर सकते इसलिये वे उनकी निन्दा करते हैं। जब सब से पहले मशीनों से काम करना आरम्भ हुआ था तब हाथ से काम करनेवाले कारीगर भी उनकी इसी प्रकार निन्दा करते थे और उनको नष्ट कर देना चाहते थे। आजकल के इन छोटे कारख़ानेवालों का मनोभाव भी उन कारीगरों से मिलता हुआ है। जब वे ट्रस्टों की बहुत बड़ी और

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
क़ीमती मशीनों का, जिनसे माल बनाने में बहुत ही कम परिश्रम की आवश्यकता पड़ती है, मुक़ाबला नहीं कर सकते तो वे इन ट्रस्टों को ही, जिन्होंने व्यवसाय पर एकाधिकार कर लिया है, नष्ट कर देने की सलाह देते हैं।

पर ये ट्रस्ट विकास के स्वाभाविक परिणाम हैं। अब मशीनों की इतनी उन्नति हो चुकी है और वे इतनी मूल्यवान हो गई हैं कि छोटे कारख़ानेवाले उनका उपयोग नहीं कर सकते। अगर कोई फिर से व्यवसाय में पहले के समान प्रतियोगिता उत्पन्न करना चाहता है तो इसके लिये आवश्यक है कि आधुनिक मशीनों को जो सब प्रकार का काम आश्चर्यजनक रूप से अपने आप कर डालती हैं नष्ट कर दिया जाय और उसी प्रकार की मशीनों से काम लिया जाय जो पचास वर्ष पहले चलती थीं। लोग साम्यवादियों को स्वप्न देखनेवाला कहते हैं क्योंकि वे समाज के विकास में और उसकी निरन्तर उन्नति में विश्वास रखते हैं, पर उनसे भी बढ़कर स्वप्न देखनेवाले वे लोग हैं जो सामाजिक विकास की गति को पीछे की तरफ़ लौटाना चाहते हैं। अगर यह किसी तरह सम्भव भी हो जाय और हम पचास वर्ष पहले के समान प्रतियोगिता के युग को फिर वापस ले आवें तो भी उससे कुछ लाभ नहीं हो सकता। क्योंकि पचास वर्ष बाद फिर हमको वर्तमान स्थिति का ही मुक़ाबला करना पड़ेगा।

जब तक पूँजीवाद स्थिर है तब तक ट्रस्टों का भी अस्तित्व रहेगा। पर जनता सदा के लिये किसी के एकाधिपत्य को स्वीकार

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं कर सकती। जब वे देखेंगे कि प्रतियोगिता का युग फिर से नहीं लाया जा सकता तो वे पूँजीवादी प्रणाली को लौट देंगे। वैसे तो ट्रस्टों ने ही पूँजीवाद के मृत्युपत्र पर मुहर लगा दी है, पर उसके सिवा और भी कितने ही कारण हैं जो उसकी जड़ काट रहे हैं।

जाति (Castes)

प्राचीन सामाजिक प्रणालियों के अध्ययन करने से विदित होता है कि जब किसी प्रणाली में श्रेणी-विभाग जाति का रूप ग्रहण कर लेता है, अर्थात् जब उसके नियम इतने कठोर बना दिये जाते हैं कि एक श्रेणी का व्यक्ति दूसरी श्रेणी में सम्मिलित नहीं हो सकता तो उस प्रणाली का नाश हो जाता है।

प्राचीन दासत्व प्रथा के युग में शासक-वर्ग का उद्देश्य सभ्यता का निर्माण करना था और एक श्रेणी का व्यक्ति दूसरी श्रेणी में जा सकता था। जब शासकों ने सभ्यता की नींव जमा दी तो समाज के लिये उनका कोई विशेष उपयोग न रहा। अब उन्होंने एक जाति का स्वरूप ग्रहण कर लिया और दूसरे लोगों का उनमें सम्मिलित हो सकना असम्भव हो गया। इस दशा में उन्होंने कुछ समय तक शक्ति द्वारा अपना अस्तित्व स्थिर रखा, पर अन्त में उनको नष्ट हो जाना पड़ा।

सामन्त-शासन के आरम्भ में शासक-वर्ग का उद्देश्य किसानों और कारीगरों की रक्षा करना था। उस समय अन्य लोग भी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उस वर्ग में सम्मिलित हो सकते थे। पर जब उपरोक्त उद्देश्य पूरा हो गया तो शासकों की एक जाति बन गई और केवल उनके वंशज ही इस पदवी का उपभोग करने लगे। तब सामन्त-शासन का भी अन्त हो गया।

पूँजीवाद के आरम्भ में शासक-वर्ग का उद्देश्य प्रतियोगिता द्वारा पैदावार के साधनों (मशीनों) की उन्नति करना था। उस अवस्था में एक श्रेणी का व्यक्ति दूसरी श्रेणी में जा सकता था। पर अब प्रतियोगिता का युग प्रायः समाप्त हो चुका है और इसलिये पूँजीपति मशीनों की उन्नति के लिये किसी प्रकार की चेष्टा नहीं कर सकते। इस समय तो अवस्था ऐसी हो गई है कि मशीनें जितना माल तैयार कर सकती हैं वही खर्च नहीं किया जा सकता और इसलिये सब प्रकार की सामग्री की उत्पत्ति कृत्रिम उपायों से घटाई जा रही है। ऐसी अवस्था में यदि कोई और भी अधिक तथा शीघ्रतापूर्वक माल तैयार करने की मशीनें बनाने में बुद्धि और शक्ति लगाये तो उसका क्या उपयोग हो सकता है? अब दिन पर दिन संसार की सम्पत्ति थोड़े से व्यक्तियों के अधिकार में पहुंचती जाती है, दिन पर दिन श्रेणी-विभाग के नियमों की कठोरता बढ़ती जाती है और दिन पर दिन एक मजदूर श्रेणी के व्यक्ति के लिये पूँजीपति श्रेणी में घुस सकना असम्भव हो रहा है। अब से पचास वर्ष पूर्व जिस प्रकार मजदूरों के साधारण लड़के तेल और लोहे का व्यवसाय करके अपने उद्योग के द्वारा राकफेलर और कारनेगी बन गये थे अब किसी मजदूर लड़के

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के लिये उस तरह की सफलता प्राप्त कर सकना प्रायः असम्भव है। क्योंकि इन व्यवसायों पर अब बहुत बड़े पूँजीपतियों का अधिकार हो गया है और छोटे पूँजीपतियों को भी उनमें स्थान नहीं है। कितने ही साधारण कारखानेवाले तो प्रतियोगिता में अपना सर्वस्व खोकर अब फिर से मजदूर बन गये हैं। इसके विपरीत बड़े-बड़े करोड़पतियों के लड़के जन्म से ही विशाल व्यवसाय के स्वामी होते हैं और वे चाहे कैसे भी मूर्ख या पतित क्यों न हों भविष्य में वे ही राष्ट्र के मुखिया समझे जायँगे।

इस प्रकार अब पूँजीवाद में भी जाति की सृष्टि हो रही है और जो प्रणाली जाति के आधार पर स्थित होगी वह कदापि अधिक समय तक नहीं टिक सकती।

श्रम को बचानेवाली मशीनें

जो लोग साम्यवाद के सिद्धान्तों से अपरिचित हैं वे प्रायः आश्चर्यपूर्वक कहा करते हैं कि श्रम को बचानेवाली मशीनों का निरन्तर आविष्कार होते रहने का अन्तिम परिणाम क्या होगा? क्योंकि वे देखते हैं कि प्रत्येक नया आविष्कार हज़ारों मज़दूरों को बेकार बनाकर दुःख और दरिद्रता की अवस्था में डाल देता है। ऐसी मशीनों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती ही जाती है।

एक समय था जब कि जीवन-निर्वाह के लिये आवश्यकीय भोजन, वस्त्र तथा अन्य सामग्री उत्पन्न करने के लिये शारीरिक शक्ति की आवश्यकता होती थी। आजकल यह शक्ति भाफ या

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बिजली द्वारा प्राप्त की जाती है। तो भी अभी खानों से कोयला खोदकर निकालने, कुओं से मिट्टी का तेल प्राप्त करने और बिजली के इंजिनों को चलाने के लिए लाखों मज़दूरों की आवश्यकता होती है। अब ऐसा समय आ रहा है जब कि मनुष्य अन्य प्राकृतिक शक्तियों को वशीभूत कर लेगा और माल तैयार करने तथा आवागमन का समस्त कार्य उन्हीं शक्तियों से होने लगेगा। उस समय केवल मशीनों पर निगरानी रखने के लिये थोड़े से मनुष्यों की आवश्यकता पड़ेगी। जब यह समय आवेगा तब एक ही बार में तमाम कोयला खोदनेवाले, इंजिनियर, फायरमैन और रेलों में काम करनेवालों में से आधे व्यक्ति बेकार हो जायँगे।

इस प्रकार भविष्य में जितने आविष्कार होंगे वे मज़दूरों के काम को हलका करने के बजाय उनकी दुरवस्था को बढ़ानेवाले होंगे। यह सच है कि नवीन आविष्कारों का उद्देश्य भोजन सामग्री और वस्त्र आदि को पहले की अपेक्षा कम परिश्रम में तैयार करना होता है। तब क्या कारण है कि उनके द्वारा काम करने वालों की दशा सुधरने के बजाय और भी ख़राब होती जाती है?

इसका कारण यह है कि मानव जाति के इतिहास में फिर से वह अवसर आ पहुंचा है जब कि प्रचलित सामाजिक प्रणाली पैदावार के तरीक़े के अनुकूल नहीं है। जिस प्रकार प्राचीन जातिगत कम्यूनिज़्म, दास-प्रथा और सामन्त-शासन को अपना समय समाप्त हो जाने पर नई प्रणालियों के लिये स्थान खाली कर देना

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पड़ा था उसी प्रकार पूंजीवाद को भी किसी नवीन पैदावार के तरीक़े के अधिक उपयुक्त प्रणाली के लिये स्थान खाली कर देना पड़ेगा। यह नई प्रणाली ऐसी होगी जिसमें श्रम बचानेवाली मशीनों के आविष्कार का लाभ काम करनेवाले मजदूरों को मिलेगा।

वैदेशिक व्यवसाय और पूँजीवाद का विस्तार

व्यवसाय का एक साधारण सिद्धान्त यह है कि तैयार होनेवाला माल बराबर बिकता चला जाय। जब तक माल की बिक्री के लिये यथेष्ट बाज़ार न होगा तब तक कारखानों का बराबर चलते रह सकना असम्भव है। जब माल की बिक्री रुक जायगी तो स्वभावतः ही कारखानों में काम बन्द करना पड़ेगा और समाज के समस्त विभागों में अव्यवस्था फैल जायगी। यही अवस्था आजकल कई वर्षों से संसार के समस्त देशों में दिखलाई पड़ रही है। इसका मूल कारण क्या है इसके समझाने के लिये नीचे हम एक उदाहरण देते हैं।

अमरीकन सरकार द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट से विदित होता है कि वहाँ के मजदूरों को जितना वेतन मिलता है उससे वे देश में तैयार होनेवाले माल का १७ प्रति सैकड़ा खरीद सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि अमरीका में बननेवाले माल का ८३ प्रति सैकड़ा माल तैयार करनेवालों के सिवा अन्य लोगों द्वारा खर्च किया जाना चाहिये।

पूँजीपति और उनके मुसाहब तथा उनके अन्य आश्रित लोग

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस अतिरिक्त माल का एक भाग ख़र्च कर डालते हैं, तो भी उसका एक बड़ा अंश बच रहता है। इस माल की बिक्री कैसे की जाय ? इस माल को वे मज़दूर ख़र्च कर सकते हैं जिनसे कारख़ानों में काम नहीं कराया जाता। पर उनके पास इसको ख़रीदने के लिये पैसा कहाँ से आये। इसलिये पूँजीपति उनको नौकर रखकर उनके द्वारा नये-नये कारख़ाने, रेलें और सड़कें आदि बनवाते हैं, नई खानें खुदवाते हैं और इसके एवज में उनको वह बचा हुआ माल दिया जाता है।

पर जब ये नई फ़ैक्टरियाँ और कारख़ाने चलने लगते हैं तो उनमें भी सामान तैयार होने लगता है और पहले की अपेक्षा भी अधिक माल बचने लगता है। इसको ख़र्च करने के लिये फिर वही ढङ्ग अख़्तियार करना पड़ता है और इस प्रकार फ़ैक्टरियों, कारख़ानों तथा उनमें काम करनेवाले मज़दूरों की संख्या बराबर बढ़ती जाती है और इसके साथ ही बचनेवाले माल के परिमाण में भी असम्भव रूप से वृद्धि होती जाती है।

इस प्रकार योरोप और अमेरिका के व्यापार की वृद्धि होते-होते अब ऐसा समय आ पहुंचा है कि वहां नये कारख़ाने खोलने की ज़रा भी गुंजायश नहीं रह गई है। कुछ समय पहले एक बड़ा अङ्गरेज़ पूँजीपति अमरीका की सैर करने गया था। वहाँ एक समाचारपत्र प्रतिनिधि से बातें करते हुये उसने कहा कि अब इङ्गलैण्ड में किसी व्यवसाय में पूँजी लगाने में कुछ भी फ़ायदा नहीं होता इसलिये अङ्गरेज़ व्यवसाइयों को लाचार हो अपनी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पूँजी भारतवर्ष, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड में लगानी पड़ती है। उसने कहा कि यह सब लायड जार्ज की भ्रमपूर्ण नीति का कुपरिणाम है। यह मोटी बुद्धि का पूँजीपति समझता था कि अङ्गरेज़ व्यवसायी ज़रा से इङ्गलैण्ड में निरन्तर नये-नये कारख़ाने, फैक्टरियाँ और मिलें बनाते चले जा सकते हैं चाहे उनकी संख्या इतनी अधिक हो जाय कि लोग उनके बीच में होकर चलने का रास्ता भी न पायें। उसके मतानुसार अगर लॉयड जार्ज नये नियम न बनाता तो इङ्गलैण्ड के मज़दूर बराबर पूँजीपतियों की सम्पत्ति बढ़ाते चले जा सकते थे। पूँजीपति आर्थिक समस्याओं पर इसी ढङ्ग से विचार करना जानते हैं। वे प्रत्येक घटना के लिये किसी न किसी व्यक्ति को ज़िम्मेदार बना ही देते हैं।

जब कि व्यवसाय-प्रधान देशों में नये व्यवसायों का संचालन लाभपूर्वक नहीं हो सकता तो अन्य देशों में उसके विस्तार की चेष्टा की जाती है। जो माल अपने देश में नहीं खप सकता वह उद्योग-धन्धों में पिछड़े हुये देशों में भेजा जाता है और इस प्रकार पूँजी की वृद्धि का नया मार्ग ढूँढ़ कर निकाला जाता है। अब इस विदेशी माल का मूल्य चुकाने के उद्देश्य से इन पिछड़े हुये देशों के मज़दूर भी कारख़ाने और रेलें बनाने में लगाये जाते हैं। इस प्रकार कुछ काल में संसार के समस्त देशों में फ़ैक्टरियों और मिलों द्वारा माल बनने लगता है और सर्वत्र बहुत सा अतिरिक्त माल बचने लगता है। उदाहरणस्वरूप जो जापान पहले अमरी-
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कन माल के लिये बाज़ार बना हुआ था वह अब स्वयं बड़ा भारी व्यवसायी देश बन गया है और स्वयं अमरीका चीन के बाजार में उसकी प्रतियोगिता के कारण घबड़ा रहा है। अब चीन में भी कल-कारखानों का बनना आरम्भ हो गया है और जब ये चालीस करोड़ व्यक्ति आधुनिक ढङ्ग से माल बना कर संसार के बाज़ार को सस्ते माल से पाट देंगे तो व्यवसाय-क्षेत्र में जैसा आर्थिक सङ्कट उपस्थित होगा उसकी कल्पना कर सकना भी कठिन है।

अब हमारे पाठक समझ गये होंगे कि पिछड़ी हुई जातियों और देशों में एक-एक करके किस प्रकार पूँजीवाद का प्रचार होता है। इस प्रणाली से दक्षिण अफरीका, भारतवर्ष और चीन जैसे देशों में कल-कारखानों का काफ़ी प्रचार हो गया है और इन देशों के करोड़ों व्यक्ति जिन्होंने दस बीस वर्ष पहले मशीनों के दर्शन भी न किये थे आज विशाल मिलों में मजदूरी करके पूँजी-पतियों की सम्पत्ति की वृद्धि कर रहे हैं। इतना ही क्यों समुद्र के बीच में अवस्थित छोटे-छोटे टापुओं में भी पूँजीवाद का झण्डा गड़ चुका है और वहाँ के जङ्गलियों को ठोकपीट कर उन्नत देशों में चलनेवाले कारख़ानों के लिये कच्चा माल उत्पन्न करने में लगाया गया है। यद्यपि पूँजीपतियों का यह कार्य घोर स्वार्थपरता-युक्त और निर्दयतापूर्ण जान पड़ता है, पर वास्तव में वह सामाजिक विकास के सिद्धान्तों के अनुसार ही है। क्योंकि अगर श्रमजीवी जो कुछ उत्पन्न करते उसे सब का सब खर्च कर डालते और कुछ अतिरिक्त सामग्री शेष न रहने देते तो वर्तमान
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समय में दिखलाई पड़ने वाले विशाल उद्योग-धन्धों का निर्माण किस तरह किया जाता और किस तरह संसार के समस्त भागों में आधुनिक उत्पादन-प्रणाली का प्रचार किया जाता ? यह सच है कि उद्योग-धन्धों के स्वामी जो मजदूरों का शोषण करते हैं और उनके परिश्रम के फल को हस्तगत करके संसार भर में विशाल कल-कारखानों का निर्माण कर रहे हैं, वे केवल अपने हित का ख्याल रखकर ही इन कामों को कर सकते हैं। पर एक समय आयेगा जब ये तमाम बड़े-बड़े व्यवसायपति कहीं दिखलाई न पड़ेंगे और उन्होंने मजदूरों द्वारा जिन महान उद्योग-धन्धों की सृष्टि की है उनसे समस्त मनुष्य जाति समान रूप से लाभ उठाने लगेगी।

अब वह समय पास आता जा रहा है जबकि नये कारखानों और रेलों के बनाने के लिये मजदूरों द्वारा उत्पन्न की जानेवाली अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता न पड़ेगी। क्योंकि उस समय तक जितने कारखानों और रेलों आदि की संसार भर के मनुष्यों के जीवन-निर्वाह के लिये आवश्यकता होगी वे सब तैयार हो जायँगी। उसके पश्चात् पूँजीवाद का अधिक फैल सकना भी असम्भव हो जायगा क्योंकि संसार के सभी देशों और जातियों में उसका प्रचार हो जायगा। तब पूँजीवाद का ऐतिहासिक उद्देश्य पूर्ण रूप से समाप्त हो जायगा।

उस समय माल की बिक्री के लिये संसार में कोई नया बाजार नहीं मिल सकेगा, पर पूंजीपतियों की संचित सामग्री
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का परिणाम दिन पर दिन बढ़ता ही जायगा। ऐसी अवस्था में स्वभावतः ही प्रश्न उठता है कि आखिर उस सामग्री का क्या उपयोग होगा?

व्यवसाय संकट

इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिये हमको इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि आजकल जब बाजार की आवश्यकता से अधिक माल तैयार हो जाता है तो क्या परिणाम होता है? ऐसी अवस्था में सर्वत्र व्यवसाय-संकट (Industrial Crisis) या हलचल उत्पन्न हो जाती है। जब व्यवसायीगण अपने कारखानों में बनने वाली चीजों को बेच नहीं सकते अथवा उनकी बिक्री में उनको कोई लाभ नहीं जान पड़ता तो वे तब तक के लिये कारखाने को बन्द कर देते हैं जब तक उनके गोदामों में जमा माल बिक न जाय।

जब कारखाने बन्द हो जाते हैं, तो उनमें काम करनेवाले मज़दूर बेकार हो जाते हैं, उनकी आमदनी बन्द हो जाती है और वे किसी तरह की सामग्री नहीं खरीद सकते। जो कारखाने बन्द होते हैं वे कच्चे माल का खरीदना भी बन्द कर देते हैं और इस लिये कच्चा माल उत्पन्न करनेवाले व्यवसाय भी रुक जाते हैं। इससे और भी कितने ही व्यक्ति बेकार हो जाते हैं, उनकी खरीदने की शक्ति जाती रहती है और इसके परिणामस्वरूप कितने ही और कारखाने बन्द हो जाते हैं। कारखानों के

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बन्द हो जाने से कोयले की बिक्री घट जाती है और इसलिये कितनी ही खानें भी बन्द हो जाती हैं। व्यवसाय के रुक जाने से रेलों का लाभ घट जाता है और उनमें से भी बहुत से कर्मचारी निकाल दिये जाते हैं। इस प्रकार दल के दल श्रमजीवी बेकार होते जाते हैं और व्यवसाय-संकट भीषण रूप धारण करता चला जाता है।

बेकार श्रमजीवी लाखों की तादाद में सड़कों पर घूमते फिरते हैं और माल से ठसाठस भरी हुई दुकानों को देखकर अपना मनोरंजन करते हैं। क्योंकि यह वही माल होता है जिसको उन्होंने बनाया है पर जिसे अब वे ही खरीद नहीं सकते। वे काम करना चाहते हैं पर उनको काम नहीं मिलता, क्योंकि व्यवसायी-गण जब तक अपने गोदामों में जमा माल न बेच लें तब तक नया माल बनाकर क्या करें? श्रमजीवी उस माल को खरीद नहीं सकते क्योंकि वे बेकार हैं। यह एक ऐसी समस्या होती है जिसमें श्रमजीवियों को इस लिये भूखे, नङ्गे और बिना घरबार के रहना पड़ता है चूंकि उन्होंने बहुत अधिक भोजन, सामग्री, कपड़े, और मकान वगैरह तैयार कर डाले। एक भूखों मरने वाले व्यक्ति के लिये यह बात अवश्य ही मनोरंजन करनेवाली होगी कि वह इसलिये भूखों मर रहा है चूँकि भोजन-सामग्री बहुत अधिक उत्पन्न हो गई है, अथवा उसे इसलिये चिथड़े लपेट कर रहना पड़ रहा है चूँकि कपड़ा बहुत अधिक बनाया गया है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस विवरण से हम व्यवसाय-संकट की परिभाषा जान जाते हैं। व्यवसाय-संकट उस अवस्था का नाम है जिसमें संसार का बाजार सब तरह के माल से इस प्रकार पट जाता है कि फिर अधिक माल बना सकना असम्भव हो जाता है। इस समय पूँजीवाद उन्नति करते-करते उस अवस्था को पहुंच जाता है जिसमें अपनी संचित सामग्री के कारण उसका दम घुटने लगता है। इस अवस्था का वर्णन करते हुए कार्लमार्क्स के सहयोगी एञ्जिल्स ने लिखा है कि "इस समय सामग्री की विक्री के साधनों से उसके उत्पन्न करने के साधन बहुत अधिक अग्रसर हो जाते हैं और एक प्रकार का विप्लव मचा देते हैं।"

इस प्रकार के व्यवसाय-संकट से पूँजीवादी प्रणाली की रक्षा का एकमात्र उपाय कोई नया बाजार ढूँढ़ निकालना ही है। व्यवसाय-प्रधान देशों के बाजारों में जो माल भरा होता है उसे पिछड़े हुये देशों में ले जाकर बेचा जाता है और तब कहीं जाकर कारखानों में फिर से काम शुरू किया जा सकता है। पर इन दिनों मशीनों की दिन पर दिन उन्नति हो रही है और उनके द्वारा पहले की अपेक्षा कहीं अधिक माल बनाया जाने लगा है। इसी प्रकार व्यवसाय-प्रधान देशों के श्रमजीवियों की संख्या भी बढ़ती जाती है। इन कारणों से प्रत्येक नया व्यवसाय-संकट अपने पूर्ववर्ती व्यवसाय-संकट की अपेक्षा अधिक भीषण होता है और उससे पूँजीवाद की प्राणरक्षा तभी होती है जब अतिरिक्त सामग्री किसी नये देश में ले जाकर डाल दी जाती है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अन्त में ऐसा समय आयेगा जब कि संसार का कोई बाज़ार कारख़ानों में तैयार होने वाली अतिरिक्त सामग्री को नहीं खपा सकेगा। उस समय पूँजीवाद का अधिक विस्तार हो सकना सर्वथा असम्भव हो जायगा और श्रमजीवियों की क्रयशक्ति सदैव के लिये नष्ट हो जायगी। कारख़ानों में बननेवाली सामग्री किसी तरह न बिक सकेगी, और पूँजीवाद ऐसे व्यवसाय-संकट में फँस जायगा जिससे उसका किसी प्रकार उद्धार न हो सकेगा।

समय-समय पर उपस्थित होनेवाले ये व्यवसाय-संकट एक जर्जर प्रणाली के मरण-सूचक झटके हैं। ये झटके दिन पर दिन अधिक वेग के साथ आते हैं। जब पूँजीवाद का विस्तार चरम सीमा तक पहुंच जायगा और संसार में कोई नया बाज़ार शेष न बचेगा तो ऐसा व्यवसाय-संकट उपस्थित होगा जो संसार के प्रत्येक कारख़ाने, खान और रेल को बन्द कर देगा। फिर किसी हालत में नफे के लिये उनका चलाया जा सकना असम्भव होगा। यह हमने उस दशा का दिग्दर्शन कराया है जो, यदि पूँजीवाद अन्त तक स्थिर रह सका और उसने अपनी राजी से नई प्रणाली के लिये स्थान खाली न किया तो, एक दिन अवश्य देखने में आयेगी।

इससे स्पष्ट है कि चाहे हम पूँजीवाद को पसन्द करें या नापसन्द, उसका अन्त होना अवश्यम्भावी है और उसकी रक्षा की

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाहे जितनी भी युक्तियां क्यों न की जायँ व्यर्थ हैं। अब इस प्रणाली का अधिक समय तक टिक सकना असम्भव है। जो लोग पूँजीवाद का पक्ष समर्थन करने में परिश्रम करते हैं वे अपनी शक्ति को व्यर्थ में गँवा रहे हैं। वर्तमान सामाजिक प्रणाली की नींव किसी प्रकार दृढ़ नहीं बनाई जा सकती। अब पूँजीवाद की उपयोगिता नष्ट हो चली है और उसकी जड़ हिल गई है। वर्तमान समय में सर्वत्र दिखलाई देनेवाली आर्थिक हलचल और भीषण बेकारी से सिद्ध होता है कि यह प्रणाली जीवन-निर्वाह के वर्तमान साधनों के अनुकूल नहीं है और इसलिये इसको भी वही मार्ग ग्रहण करना पड़ेगा जो इससे पूर्ववर्ती सामाजिक प्रणालियां ग्रहण कर चुकी हैं। इसके फलस्वरूप संसार में अवश्य ही एक क्रान्ति होगी, जिसके लक्षण इसी समय प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ रहे हैं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा अध्याय

भावी सामाजिक प्रणाली

वर्तमान समय में हम लोगों को जिस समस्या पर विचार करना है वह यह नहीं है कि हम पूँजीवाद की जड़ खोदने की चेष्टा करें या न करें। इस प्रणाली की जड़ को तो ऐसी आर्थिक शक्तियाँ खोद रही हैं जो मनुष्य के वश से बाहर हैं। अगर ये शक्तियां काम न कर रही होतीं तो किसी भी राजनीतिक आन्दोलन-कारी संस्था की यह सामर्थ्य न थी कि वह वर्तमान प्रणाली को लौट सके। साथ ही यह भी सच है कि जब वे शक्तियां काम कर रही हैं तो कोई राजनीतिक दल इस प्रणाली की रक्षा भी नहीं कर सकता। इसलिये वर्तमान समय के विचारशील व्यक्तियों के ध्यान देने योग्य विषय यही है कि पूँजीवाद के पश्चात् किस सामाजिक प्रणाली का आविर्भाव होगा और इस कार्य में हम किस प्रकार सहायता पहुंचा सकते हैं ?

आजकल कितने ही लोग ऐसे देखने में आते हैं जो विश्वास रखते हैं कि वर्तमान प्रणाली एक दिन अवश्य ही नष्ट हो जायगी और पृथ्वी पर एक ऐसे युग का आविर्भाव होगा जिसमें मनुष्य-मात्र भाइयों की तरह रहने लगेंगे। पर आश्चर्य यही है कि इतने पर भी ये व्यक्ति साम्यवाद की निन्दा करते हैं और कहते हैं कि

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उससे किसी तरह की भलाई नहीं हो सकती। वे कहते हैं कि साम्यवादियों का आन्दोलन समाज के एक दल को दूसरे दल के विरुद्ध खड़ा करता है जब कि श्रेष्ठ मार्ग यह है कि दो विरोधी दलों के बीच में मेलमिलाप उत्पन्न करके काम किया जाय। इस पक्ष के एक लेखक ने अपने अभिप्राय को इन शब्दों में व्यक्त किया है—"प्रश्न यह है कि किस प्रकार अमीर और ग़रीब एक दूसरे को अपना भाई समझते हुये रह सकते हैं।" इससे यही तात्पर्य निकाला जा सकता है कि जब इन दोनों दलों में एक दूसरे के प्रति प्रेमभाव उत्पन्न हो जायगा तभी संसार में भ्रातृ-भाव का उदय हो सकता है। ये सीधेसादे और भले आदमी सचमुच ही ऐसा समझते हैं कि साम्यवादी विभिन्न दलों में कलह की वृद्धि करते हैं।

ऐसे विचार के लोगों से हम केवल इतना ही पूछना चाहते हैं कि "हम इस आन्दोलन को जो चारों तरफ़ फैलता जा रहा है किस प्रकार रोक सकते हैं?" वे कहेंगे कि अगर साम्यवादी आन्दोलन बन्द कर दिया जाय और किसी दल के प्रति घृणा का भाव फैलाने की चेष्टा न की जाय तो यह समस्या अपने आप हल हो जायगी। अब स्थिति यह है कि वर्त्तमान अवस्था में पूँजीवादी दल तो सब प्रकार से सन्तुष्ट है, क्योंकि वह श्रम-जीवियों का स्वामी बना हुआ सब प्रकार के सुख भोग रहा है। जो कुछ आन्दोलन और 'घृणा फैलाने' का कार्य हो रहा है वह

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रमजीवी दल द्वारा ही किया जा रहा है, क्योंकि उन्हीं के स्वार्थ पर आघात होता है और इसलिये वे ही असन्तुष्ट हैं। पर ये लड़ाई झगड़े को नापसन्द करनेवाले सज्जन इस प्रश्न पर इस निगाह से विचार नहीं करते कि श्रमजीवियों का शोषण अथवा लूटा जाना किस प्रकार बन्द हो सकता है वरन् वे यह सोचते हैं कि श्रमजीवी लूटे रहते जाने पर भी किस प्रकार शान्त बने रह सकते हैं।

इन नेक लोगों की दृष्टि में दो दलों का झगड़ा अथवा वर्ग-कलह ऐसी खराब बात है कि वे उसके सम्बन्ध में किसी तरह का वादविवाद उठाना ही बुरा समझते हैं। जिस प्रकार शुतरमुर्ग बालू में सर घुसेड़ कर अपने ऊपर आने वाले खतरे से बचने की कल्पना करता है उसी प्रकार ये लोग वर्ग-कलह के सम्बन्ध में सब तरह के वादविवाद को रोककर उसका अन्त कर देना चाहते हैं। अगर वर्ग-कलह ऐसी ख़राब बात है जिसके सम्बन्ध में ये चिकने चुपड़े और मोटे ताजे लोग कुछ सुनना भी पसन्द नहीं करते तो जरा ख्याल कीजिये कि वर्ग-कलह के परिणाम-स्वरूप जिन लोगों को अपना खून सुखाना पड़ रहा है उनकी दृष्टि में वह कैसी बात होगी? ये ही लोग वर्ग-कलह के सम्बन्ध में बातें करते हैं। पर इस बात करने का मतलब यह नहीं है कि यह विषय उनको मनोरंजक प्रतीत होता है, वरन् इसका मतलब यह है कि वे इस विषय का अन्त कर देना चाहते हैं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिये श्रमजीवियों के आन्दोलन का यह अर्थ लगाना कि वे एक दल को दूसरे दल के विरुद्ध खड़ा कर रहे हैं ग़लत है। जो लोग साम्यवादियों के सम्बन्ध में इस प्रकार के विचार प्रकट करते हैं वे जानबूझ कर या ग़लती से असत्य का प्रचार करते हैं वास्तव में एक दल के विरुद्ध दूसरा दल पहले ही से मौजूद है और यही वर्तमान समय में होनेवाले आन्दोलन का एकमात्र कारण है। क्या यह श्रमजीवियों के आन्दोलन का फल है कि किसी तरह की मिहनत न करनेवाले लोग महलों में रहते हैं जब कि काम करनेवालों को दुर्गन्धपूर्ण कोठरियों में रहना पड़ता है? क्या श्रमजीवियों के आन्दोलन के कारण छोटे-छोटे बच्चों को कारखाने में काम करके प्राण देने पड़ते हैं और कोयले की खानों में मज़दूरों को जीते जी गड़ जाना पड़ता है? घोर दरिद्रता से पीड़ित होकर श्रमजीवियों की पुत्रियों को पाप के व्यवसाय में लिप्त होना पड़ता है और उनके पुत्रों को रणक्षेत्र में जाकर एक दूसरे का गला काटना पड़ता है, क्या इसका कारण श्रमजीवियों का आन्दोलन है? कारखानों में जो आमदनी होती है उसमें से केवल १७ प्रति सैकड़ा काम करनेवाले मज़दूरों को मिलता है और शेष पूँजीपति की जेब में जाता है, क्या यह भी श्रमजीवियों के आन्दोलन का ही परिणाम है? नहीं, ये तमाम बातें श्रमजीवियों के आन्दोलन के कारण उत्पन्न नहीं हुई हैं, वरन् इन बातों के कारण ही श्रमजीवी अथवा साम्यवादी आन्दोलन उत्पन्न हुआ है और इन्हीं के कारण विभिन्न दलों में

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाई जानेवाली घृणा की उत्पत्ति हुई है। इसलिये वर्ग-कलह श्रमजीवी आन्दोलन का फल नहीं है वरन् उसका कारण है और जब तक वर्ग-कलह का अस्तित्व रहेगा तब तक आन्दोलन भी चलता रहेगा।

थोड़ी देर के लिये हम मान लेते हैं कि दोनों दलों में मेल हो गया और दोनों एक दूसरे से खूब प्रेम करने लगे। हम कल्पना कर लेते हैं कि ग़रीब और अमीर दोनों ने 'भाइयों की तरह' मिलकर रहना सीख लिया। पर वे चाहे कैसे भी प्रेमपूर्वक क्यों न रहने लगें फिर भी गरीब और अमीर का अन्तर तो बना ही रहेगा। जब तक पूँजीवाद क़ायम रहेगा तब तक ग़रीब लोग अमीरों द्वारा इसी प्रकार चूसे जाते रहेंगे। तब यह मेल कब तक और कैसे क़ायम रहेगा। साम्यवादी ऐसे मेल और भ्रातृभाव को दूर ही से नमस्कार करते हैं। वे तो ऐसी प्रणाली की स्थापना होने के लिये उत्सुक हैं जिसमें स्वामी और दास का अन्तर ही न रहे, जिसमें न कोई अमीर हो और न कोई ग़रीब।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँचवां अध्याय

पूंजीवाद की असमर्थता

अगर हम यह भी मान लें कि कोई पूँजीपति श्रमजीवियों को अपना भाई समझ कर उनका शोषण बन्द कर देना चाहता है और उनको सब प्रकार से सुखी बनाने की चेष्टा करता है, तो भी इससे वर्तमान अवस्था में किसी प्रकार का सुधार नहीं हो सकता। इसका फल यही होगा कि वह पूँजीपति दूसरे व्यवसाइयों की प्रतियोगिता में ठहर न सकेगा, उसका कारबार चौपट हो जायगा और उसका स्थान कोई दूसरा पूँजीपति जो श्रमजीवियों का शोषण करने को तैयार होगा ग्रहण कर लेगा। क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवसायिक प्रतियोगिता में विजय उसी पूंजीपति की होती है जो सस्ते से सस्ता माल बना सकता है और सस्ता माल उसी का होगा जो अपने कर्मचारियों से कम से कम मजदूरी में काम करायेगा। अन्यथा एक पूँजीपति की हैसियत से उसका अस्तित्व स्थिर नहीं रह सकता। श्रमजीवियों का शोषण बन्द कर सकना उसकी शक्ति से बाहर है। पूँजीवादी वर्ग अगर चाहे भी तो वह नई उत्पादन प्रणाली के अनुकूल समाज का पुनर्सङ्गठन नहीं कर सकता।

सच तो यह है कि पूँजीवादी वर्ग में श्रमजीवियों का शोषण

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बन्द कर सकने की शक्ति भी हो तो भी वे कभी ऐसा करने को तैयार न होंगे। वे स्वभाव ही से स्वार्थी होते हैं और सदा श्रम-जीवियों के ऊपर सवार रहना पसन्द करते हैं। क्योंकि इस प्रकार जीवन व्यतीत करना उनके लिये काम करने की अपेक्षा कहीं अधिक आनन्ददायक जान पड़ता है। इसके सिवा उनके चारों तरफ़ का वातावरण और उनकी शिक्षा-दीक्षा इस प्रकार की होती है कि उनको विश्वास रहता है कि वे जो कुछ करते हैं वही न्यायानुकूल है। उनका विश्वास होता है कि वे ही समाज के रक्षक हैं और यदि राज्य तथा व्यवसाय की बागडोर एक बार भी साधारण जनता के हाथ में चली गई तो पृथ्वी पर से सभ्यता लोप हो जायगी। इसके विपरीत जिस परिस्थिति में श्रमजीवियों को रहना पड़ता वह कदापि ऐसी नहीं होती जिससे वे पूँजी-पतियों को समाज का रक्षक समझ सकें। इसलिये उनका उद्देश्य सदैव इस प्रणाली को, जिसका आधार हर एक बात में नफ़ा उठाने पर रहता है, लौट देना ही होता है।

क्रमशः सुधार के पक्षपाती

कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जो इस शोषण-प्रणाली के अनौचित्य को स्वीकार करते हैं और कहते हैं कि मनुष्यमात्र में भ्रातृभाव को स्थापना होने से पहले इसका अन्त हो जाना आवश्यकीय है। पर इस प्रणाली का अन्त किस प्रकार किया जाय इस विषय में साम्यवादियों के साथ उनका मतभेद है। उनका

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विश्वास है कि जैसे-जैसे मज़दूरों की आमदनी बढ़ती जायगी और वे अधिक सामग्री ख़र्च करने लगेंगे वैसे-वैसे ही श्रेणी-भेद क्षीण होता जायगा। उनकी सम्मति में पूँजीवादी प्रणाली के स्थान में सहयोग-प्रणाली की स्थापना धीरे-धीरे होनी चाहिये और इसके लिये बजाय क्रान्तिकारी उपायों से काम लेने के एक-एक क़दम आगे बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार के विचार प्रायः उन लोगों के देखने में आते हैं जिनको किसी प्रकार का आकस्मिक परिवर्तन पसन्द नहीं होता, और इसलिये वे यह कल्पना करते हैं कि यह परिवर्तन उसी दशा में अच्छा होगा जब कि वह क्रमशः हो। पर वास्तव में इन लोगों की धारणा में कुछ सार नहीं है।

यह सिद्ध करने के लिये कि पूँजीवादी प्रणाली धीरे-धीरे लोप होगी ये लोग अपने मन से ही यह कल्पना कर लेते हैं कि श्रमजीवियों की क्रयशक्ति (माल ख़रीदने की सामर्थ्य) बराबर बढ़ती जायगी और वे कारख़ानों में बननेवाली सामग्री का एक बड़ा भाग ख़र्च करने लग जायँगे। पर यह धारणा सत्य नहीं है। इसके विपरीत श्रमजीवी दिन पर दिन कारख़ानों में बनने वाले माल का थोड़ा भाग ख़र्च कर रहे हैं। क्योंकि नये-नये युगान्तर-कारी आविष्कारों के कारण एक श्रमजीवी मशीनों द्वारा बहुत अधिक माल तैयार करने लगा है, पर उसको मज़दूरी उतनी ही मिलती है जिससे उसका किसी प्रकार गुज़ारा चल सके। शेष
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमाम सामग्री पूँजीपतियों के हिस्से में रहती है। अमरीका की सरकारी रिपोर्टों के अनुसार सन् १८८५ में मजदूर जितने मूल्य की सामग्री तैयार करते थे उसका आधा अथवा ५० प्रति सैकड़ा उनको वेतन स्वरूप देना पड़ता था और ५० प्रति सैकड़ा मालिकों के लिये बचता था। पर सन् १९१० में वे जो कुछ उत्पन्न करते उसमें से केवल १७ प्रति सैकड़ा उनको मिलता था और ८३ प्रति सैकड़ा पूँजीपतियों की जेब में जाता था। यद्यपि इससे नये आँकड़े हमारे सामने नहीं हैं पर गत महायुद्ध के पश्चात् मशीनों की जो अभूतपूर्व उन्नति हुई है तथा कारखानों के प्रबन्ध में जो सुधार हुये हैं उससे हमको सन्देह है कि मजदूरों के हिस्से में उत्पत्ति का दस प्रति सैकड़ा भी आता है या नहीं।

जब हम इस तथ्य को ध्यान में रखकर विचार करते हैं तो हमको मालूम हो जाता है कि श्रमजीवियों की शोषण-प्रणाली का अन्त होने के वजाय दिन पर दिन उसकी और भी अधिक वृद्धि हो रही है। स्वामी और सेवकों के बीच में जो खाई खुदी हुई है वह और भी चौड़ी होती जाती है और वर्ग-कलह की निरन्तर वृद्धि हो रही है। यह श्रेणी-भेद जैसे-जैसे अधिक स्पष्ट होता जायगा वैसे-वैसे आन्दोलन और पारस्परिक विरोध की भी वृद्धि होती जायगी।

विभिन्न श्रेणियों में पाये जानेवाले इस विरोध का दोष श्रमजीवी और पूंजीपति दोनों में से किसी के सर नहीं मढ़ा जा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सकता। यह विरोध का भाव उत्पादन-प्रणाली में परिवर्तन होने का ही फल है। इस परिवर्तन का मूल कारण आर्थिक-विकास का स्वाभाविक नियम है जिसे किसी भी प्रकार की बुरी या भली आलोचना द्वारा रोका नहीं जा सकता। अब श्रमजीवी और पूँजीपतिवर्ग की कलह संघर्ष के रूप में परिणित होती दिखलाई दे रही है। इसमें दोनों में से एक वर्ग या दल की विजय होनी निश्चित है।

शासक-वर्ग के नष्ट होने के अन्य ऐतिहासिक कारण

अधिकांश साम्यवादियों की सम्मति है कि वर्तमान सामाजिक प्रणाली अर्थात् पूँजीवाद का अन्त प्राचीन युग की अन्य प्रणालियों के अन्त से भिन्न प्रकार का होगा। प्राचीनकाल की सामाजिक प्रणालियों में शासकवर्ग जब जीवन-निर्वाह के नवीन साधनों के अनुकूल समाज का पुनर्सङ्गठन करने में असमर्थ सिद्ध हुआ तो दूसरे वर्ग ने जो इस उद्देश्य को पूर्ण करने की योग्यता रखता था उसे पराजित करके छिन्न-भिन्न कर दिया। इसका प्रमाण हम सामन्त शासन तथा पूँजीवाद के विग्रह में पा सकते हैं जिसे समाप्त हुये थोड़ा ही समय गुजरा है और जिसका पूरा विवरण हमको प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथों में प्राप्त है। उस युग में आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप एक ऐसे दल की उत्पत्ति हुई जो कारखानों की स्थापना के पक्ष में था। इसके विरुद्ध उस काल का शासक-समुदाय लोगों को उसी पुराने ढर्रे की खेती
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा दस्तकारी में ही लगाये रखना चाहता था, क्योंकि उसका लाभ इसी में था। इसके परिणामस्वरूप शासकवर्ग तथा पूंजीपतियों में संघर्ष आरम्भ हुआ जिसमें नये दल की विजय हुई। इसका कारण यह था कि सामन्त शासन की पुरानी सामाजिक प्रणाली सारहीन हो चुकी थी और विकास की गति पूंजीपतियों के अनुकूल थी।

श्रमजीवियों से प्रायः यह भी कहा जाता है कि पूँजीपतियों द्वारा उनका शोषण अनिवार्य है क्योंकि पूंजीपति उनकी अपेक्षा अधिक योग्य और शक्तिशाली हैं। विकासवाद का सिद्धान्त है कि सब से अधिक उपयुक्त प्राणी ही जीवन-संग्राम में सफलता प्राप्त करता है। इसी के अनुसार श्रमजीवियों को पूंजीपतियों का भार वाहक होने को वाध्य होना पड़ता है।

प्राचीन काल में पृथ्वी पर ऐसे विशालकाय भीषण प्राणी पाये जाते थे जिनके भय से उस काल के मनुष्य व्याकुल रहते थे और जो अन्य समस्त प्राणियों को अपना भक्ष्य समझते थे। पर जब जीवन निर्वाह की अवस्था में परिवर्तन हो गया और वे विशालकाय प्राणी उसके अनुकूल न चल सके तो उनको नष्ट हो जाना पड़ा। यही बात पूंजीपति वर्ग के लिये कही जा सकती है। अपने युग में पूंजीपति वर्ग शासन का अधिकारी था। पर अब उत्पादन-प्रणाली में परिवर्तन होने से जीवन-निर्वाह की अवस्था बदल गई है और पूँजीपति उसके अनुकूल समाज का

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनर्संगठन करने में असमर्थ है। इसलिये इसका स्थान स्वभावतः ही एक ऐसे वर्ग को मिलना चाहिये जो समाज का स्वरूप नई उत्पादन-प्रणाली अनुकूल बना सके।

समाज की तुलना एक बालक से और समाज में प्रचलित विभिन्न प्रणालियों की उसके पहनने के कपड़ों से की जा सकती है। जैसे-जैसे बालक बड़ा होता जाता है वह पुराने कपड़ों को उतार कर नये कपड़े पहिनता है। इसी प्रकार समाज का जैसे-जैसे विकास होता जाता है वह एक प्रणाली के बाद दूसरी प्रणाली को ग्रहण करता जाता है। प्रत्येक क्रान्तिकारीवर्ग उसके लिये एक नई पोशाक तैयार करके पहिनाता है। लड़का प्रत्येक नई पोशाक में कुछ समय के लिये अच्छा दिखलाई पड़ता है, पर अन्त में ऐसा समय आता है जब प्रत्येक पोशाक उसके लिये छोटी और तङ्ग हो जाती है। प्रत्येक पोशाक बनानेवाले वर्ग ने समाज को इसके लिये बाध्य किया कि वह उसी पोशाक को हमेशा पहने रहे, और प्रत्येक बार उठते हुये क्रान्तिकारी वर्ग ने यह देखकर कि पुरानी पोशाक अब किसी तरह काम नहीं देती उसके लिये नई पोशाक तैयार की।

यही अवस्था आजकल दिखलाई पड़ रही है। पूंजीपतिवर्ग ने जिनकी गिनती किसी समय क्रान्तिकारियों में थी, जो पोशाक बनाई थी उसीको आजकल बालक रूपी समाज पहिन रहा है और पूँजीपति समझते हैं कि उसका काम हमेशा उसी से चलता

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहेगा। पर जैसे-जैसे बालक बढ़ता जाता है वह पोशाक तङ्ग होती जाती है और सब तरफ से खिंची हुई है। बेचारा बालक तकलीफ के मारे रोता चिल्लाता है और कभी-कभी यंत्रणा से व्याकुल होकर इस प्रकार हाथ पैर पटकता है जिससे उसके संरक्षक पूँजीपति अत्यन्त त्रस्त हो उठते हैं। वे यह तो समझ नहीं पाते कि बालक को क्या कष्ट हो रहा है, केवल आन्दोलनकारियों को उसकी दशा के लिये जिम्मेदार समझते हैं। इस बीच में एक बुद्धिमान युवक—वर्तमान समय का क्रान्तिकारीवर्ग—उस बालक के कष्ट को समझता है और उसके लिये नई पोशाक तैयार करने की चेष्टा करता है। पूँजीपति उसे नई पोशाक बनाते देखकर आपे से बाहर हो जाते हैं। वे सुधार की चेष्टा आरम्भ करते हैं और पोशाक में से दबाव को खुलवा कर काम चलाने की चेष्टा करते हैं। वे क्रोधित होकर कहने लगते हैं:—"दूर हो यहां से, तुम अराजक हो, तुम दुराचारी हो, तुम सभ्य समाज में रहने लायक नहीं हो। तुम बालक को बड़ा कोट नहीं पहिना सकते। उसे हमारी बनाई पोशाक ही उम्र भर पहिननी पड़ेगी।"

पर बालक दिन पर दिन बढ़ता ही जाता है और उसकी पोशाक बराबर तङ्ग होती चली जाती है। खिंचने के कारण वह जगह-जगह से फटने लगती है और यह प्रत्यक्ष हो जाता है कि कुछ ही समय में वह बिल्कुल बेकार हो जायगी और तब कुछ न कुछ प्रबन्ध करना ही पड़ेगा।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शोषण-प्रणाली का एक दिन अवश्य अन्त होगा इसमें कोई सन्देह नहीं कर सकता। पिछले युगों में प्रचलित समस्त सामाजिक प्रणालियों का इसी प्रकार दो विरोधी दलों के संघर्ष द्वारा अन्त हो चुका है। वर्तमान काल में भी विरोधी दलों के बीच समझौता हो सकना असम्भव है, उन दोनों में से किसी एक को हार माननी ही पड़ेगी। इसलिये हमको बाध्य होकर इस निर्णय पर पहुंचना पड़ता है कि इस संघर्ष में एक दल दूसरे को नष्ट कर देगा और तब शोषण नीति का अन्त हो जायगा।

जब यह प्रत्यक्ष है कि पूँजीवादीवर्ग अपने को जीवन-निर्वाह नवीन साधनों के अनुसार नहीं बना सकता तो श्रमजीवी दल की सफलता निश्चित ही है। अब प्रश्न केवल यही है कि यह सफलता किस प्रकार प्राप्त हो सकेगी।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छठा अध्याय

साम्यवाद की सफलता

वर्तमान समय में पूँजीवादीवर्ग राजनीतिक और व्यावसायिक दोनों दृष्टियों से प्रधान बना हुआ है। वह राष्ट्र पर शासन भी करता है और उद्योग-धन्धों का संचालन भी करता है। इस लिये पूँजीवादी प्रणाली को बदलने के लिये श्रमजीवियों को उससे राजनीतिक और आर्थिक दोनों प्रकार के अधिकार ले लेने होंगे। अपनी आर्थिक शक्ति के द्वारा ही पूँजीवादीवर्ग श्रमजीवियों पर शासन करने में समर्थ है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि पूँजीपति अपने धन द्वारा राष्ट्र की व्यवस्थापक और कार्यकारिणी सभाओं के सदस्यों को कर्तव्यच्युत कर देते हैं, न्यायालयों में अपनी इच्छानुसार जज नियुक्त कराते हैं, परिषदों पर प्रभाव डालते हैं, शासनकर्ताओं को मनोनीत करते हैं, और सबसे अधिक उल्लेखयोग्य बात यह है कि वे देश के समाचार-पत्रों पर अधिकार रखते हैं और उनके द्वारा लोगों के दिमागों में विकृत विचार भर कर उनको प्रचलित-प्रणाली का दास बना देते हैं। दूसरी तरफ़ व्यवसायिक क्षेत्र में वे श्रमजीवियों को इसलिये दबाकर रख सकते हैं चूंकि वे शासन पर अधिकार रखते हैं और सब प्रकार के क़ानूनों को बनाते और अपने हित के अनुकूल उनकी व्याख्या करते हैं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक राष्ट्र की सरकार पर एक श्रेणीविशेष का अधिकार रहता है। उसी की सहायता के भरोसे पूँजीपति श्रमजीवियों की उत्पन्न की हुई अरबों-खरबों रुपये की सम्पत्ति हड़प लेते हैं। राजकीय क़ानून इस भयंकर लूट को नियमानुसार बतलाते हैं। पर पूँजोपतियों की जायदाद की रक्षा के लिये कोने-कोने में एक पुलिस का सिपाही खड़ा रहता है। अगर कोई श्रमजीवी चुराकर या जबर्दस्ती इस श्रमजीवियों से ही अपहरण की गई सम्पति का एक अत्यन्त छोटा अंश लेने की चेष्टा करे तो उसे अपराधी कहा जाता है, उसका पशुओं की भांति पीछा किया जाता है और उसे पकड़ कर जेलखाने में डाल दिया जाता है।

जो श्रेणी समाज में प्रधान होगी उसे अपनी स्थिति बनाये रखने के लिये अवश्य ही राष्ट्र के शासन-यंत्र को अपने अधिकार में रखना होगा। जब शासन-सत्ता उसके हाथ से निकल जायगी तो उसका प्रधानत्व भी नष्ट हो जायगा। प्राचीन काल में भी प्रत्येक स्वामी-वर्ग राष्ट्र के शासन को अपने अधिकार में रखकर ही समाज में प्रधान पद प्राप्त कर सका था और उस पद की रक्षा कर सका था। प्रत्येक उठता हुआ क्रान्तिकारीवर्ग शासन यन्त्र पर अधिकार करके ही पुरानी प्रधान श्रेणी को छिन्न-भिन्न कर सकता है। पूँजीपतियों ने सामन्त वर्ग की सत्ता को नष्ट करने के लिये पहले शासन-यंत्र पर ही अधिकार किया था।

वर्तमान समय में पूँजीपति श्रमजोवियों का शोषण इसलिये

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकते हैं क्योंकि शासन सत्ता उनके अधिकार में है। वे ऐसे कानून बनाते हैं जिनके द्वारा किसी वस्तु को लागत से दुगने चौगुने दामों में बेचना नियमानुकूल समझा जाता है और निजी जायदाद की तरफ़ आँख उठाना पाप ख़्याल किया जाता है। इससे प्रत्यक्ष है कि जो अराजकतावादी (अनार्किस्ट) चुनाव में भाग लेना निरर्थक बतलाते हैं वे बड़ी भूल करते हैं। जब तक राष्ट्र के शासन-यंत्र पर पूँजीपतियों का अधिकार है तब तक वे श्रमजीवी दल से भयभीत नहीं हो सकते। अनार्किस्ट दलवाले यदि पूँजीपतियों के विरुद्ध डाइनामाइट, बम और अन्य शास्त्रों का प्रयोग करें तो भी वे इससे तब तक भयभीत नहीं हो सकते जब तक क़ानून बनाने की शक्ति उनके हाथ में है और न्यायालय, पुलिस तथा सेना पर उनका अधिकार है।

इसलिये वर्तमान क्रान्तिकारी दल पूँजीपतियों के हाथ से शासन सत्ता लेकर ही उन पर विजय प्राप्त कर सकता है। प्राचीन काल के क्रान्तिकारीवर्गों के सम्मुख शासन-सत्ता पर अधिकार करने का एक ही तरीका था और वह था अस्त्र-शस्त्र लेकर युद्ध करना। पर वर्तमान समय का क्रान्तिकारी दल 'वोट' द्वारा ही बहुत कुछ सफलता प्राप्त कर सकता है।

हमको मालूम है कि राष्ट्र के शासन-यंत्र पर पूँजीपतियों का अधिकार होने का प्रधान कारण उनकी अपार सम्पत्ति ही है। इसलिये यह भी उनके अधिकार में है कि अगर वे चाहें तो श्रमजीवियों को 'वोट' के अधिकार से ही वंचित करदें। इसके

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सिवा अगर श्रमजीवियों के प्रतिनिधि चुनाव में जीत भी जायँ तब भी यह असम्भव नहीं है कि जो लोग इस समय शासनकर्ता बने हुये हैं वे चुनाव में किसी तरह की बेईमानी बतला कर नये लोगों को अधिकारारूढ़ ही न होने दें। उस अवस्था में श्रमजीवियों के लिये एकमात्र क़ानूनी मार्ग यही होगा कि वे न्यायालय में फरियाद करें। इस प्रकार क्रान्ति की सफलता या असफलता का आधार पूँजीपतियों द्वारा स्थापित न्यायालयों के ऊपर रहेगा। यदि श्रमजीवी अदालतों में न जायें और बलपूर्वक अपना अधिकार लेना चाहें तो इसका परिणाम यह होगा कि उनको मशीनगनों और रायफलों की गोलियों से कुत्ते बिल्ली की तरह जान देनी होगी।

इसलिये श्रमजीवियों की सफलता का मार्ग वास्तव में दूसरा ही है। वे यह तो जानते ही हैं कि शासन-यंत्र पर पूँजीपतियों का अधिकार इसीलिये है चूँकि आर्थिक दृष्टि से वे सबसे अधिक शक्तिशाली हैं। इसलिये यदि श्रमजीवी शासन-यंत्र पर शान्तिपूर्वक अधिकार करना चाहते हैं तो आर्थिक दृष्टि से उनको पूँजीपतियों की अपेक्षा भी अधिक शक्तिशाली बनना होगा। पूंजीपतियों की आर्थिक शक्ति का रहस्य यही है कि वे मजदूरों को नौकर रखकर काम करा सकते हैं। यदि श्रमजीवी एकमत होकर उनका काम करना बन्द कर दें तो पूँजीपतियों की आर्थिक शक्ति बात की बात में नष्ट हो सकती है। इसलिये जब श्रमजीवियों का संगठन ऐसा दृढ़ हो जायगा कि वे एक साथ पूँजी-

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतियों का काम करना बन्द कर सकें तो वे अवश्य ही आर्थिक दृष्टि से सबसे अधिक शक्तिशाली बन जायँगे।

यदि यह कहा जाय कि पूँजीपति उस समय भी अपनी सेना द्वारा श्रमजीवियों को दबा कर अपनी शासनसत्ता को स्थिर रख सकेंगे तो यह कठिन ज्ञान पड़ता है। क्योंकि इतने सिपाही कहां से आयेंगे जो प्रत्येक कारखाने और फैक्टरी में जाकर मज़दूरों को काम करने के लिये विवश कर सकें। यदि ऐसा किया भी जाय तो इसका फल यह होगा कि सेना चारों तरफ़ बिखर जायगी और उसकी संगठनशक्ति अधिकांश में नष्ट हो जायगी।

जब सेना की शक्ति का इस प्रकार अन्त हो जायगा तो श्रमजीवी फिर से कारखानों में जाकर काम करने लग जायँगे, पर अब वे अपने ही लिये काम करेंगे। अब श्रमजीवियों के वे प्रतिनिधि भी जो चुनाव में शासन सभा के प्रतिनिधि और राष्ट्र के शासक चुने गये थे और जिनको पुराने सरकारी अधिकारियों ने सरकारी कार्यालयों में घुसने से रोक दिया था अपने अपने पद पर आरूढ़ होकर काम करने लगेंगे और नई औद्योगिक-सरकार का कार्य-संचालन करने लगेंगे। पर उनकी आवश्यकता उसी समय तक होगी जब तक राष्ट्र में भली भाँति शान्ति स्थापित होकर समाज के पुनर्सङ्गठन का कार्य समाप्त न हो जायगा। इसके पश्चात् समाज स्वयम् नवीन उत्पादन-प्रणाली के अनुसार चलने लगेगा और सब प्रकार की पैदावार थोड़े से पूँजीपतियों का भण्डार

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरने के बजाय समस्त काम करनेवालों के उपयोग में आने लगेगी।

यहां तक हमने एक सम्भावना पर विचार किया। अब हम दूसरी सम्भावना की तरफ झुकते हैं, जिसकी इस समय संसार में विशेष प्रबलता देखने में आ रही है।

अगर पूँजीपतियों की विजय हुई ?

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में प्रोफेसर रिडपाथ नामक इतिहास-लेखक ने लिखा था कि पूँजोवादो प्रणालो का नाश होना अवश्यम्भावी है और उसके स्थान में यातो निरंकुश सैनिक शासन का आविर्भाव होगा अथवा साम्यवादी सहयोग प्रणाली का। प्रो० रिडपाथ साम्यवादी नहीं थे, वे केवल इतिहास को मनन करके उक्त परिणाम पर पहुँचे थे। उनको जान पड़ा कि जब कारखानों में तैयार होनेवाली अतिरिक्त सामग्री के लिये संसार में कोई बाजार शेष न रहेगा और पूँजी की वृद्धि रुक जायगी तो पूँजीवादी प्रणाली का अस्तित्व स्थिर रह सकना असम्भव होगा। ऐसी अवस्था में उनके मतानुसार दो ही मार्ग सम्भव हैं। एक यह कि अतिरिक्त सामग्री को एक बड़ी सेना रखकर खर्च कर दिया जाय और उसी सेना द्वारा क्रान्तिकारी श्रमजीवीवर्ग को दबाकर रखा जाय। दूसरा मार्ग एक ऐसी प्रणाली की स्थापना होना है जिसमें अतिरिक्त सामग्री के लिये बाजार की जरूरत ही न पड़े और जितना माल तैयार हो उसे कारखानों में काम करनेवाले श्रमजीवी ही खर्च कर डालें।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार की वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति को देखकर कोई भी प्रो० रिडपाथ के निर्णय की सचाई में सन्देह नहीं कर सकता। पचीस तीस साल के भीतर ही उनकी प्रथम सम्भावना एक नहीं अनेक देशों में सत्य सिद्ध हो रही है। इटली और जर्मनी के फैसिस्ट और नाजी शासन निरंकुश सैनिकवाद के सिवा और कुछ नहीं हैं। जब इन देशों के पूँजीपतियों ने देखा कि श्रमजीवी उनका नाश करके छोड़ेंगे तो प्रजासत्तात्मक शासन का अन्त करके हुकूमत की बागडोर एक दुस्साहसी व्यक्ति के हाथ में दे दी जो न्याय-अन्याय और भले-बुरे का विचार छोड़कर पाशविक बल द्वारा उठते हुये श्रमजीवी दल को कुचल डाले। इतना ही क्यों आजकल फैसिज्म की हवा समस्त संसार में चल रही है और जिस किसी देश में मजदूरों की कुछ भी प्रबलता है वहीं इस प्रकार का एक दल उत्पन्न हो गया है।

अमरीका भी अब इसी मार्ग पर चल रहा है। संसार भर में सब से अधिक और सब से बड़े धनाढ्य इसी देश में पाये जाते हैं और इसलिये भावी औद्योगिक क्रान्ति से सबसे ज्यादा भय उन्हीं को है। इसलिये वहां के बड़े-बड़े पूँजीपति अनेक वर्षों से उद्योग-धन्धों पर सरकार का नियंत्रण और सरकारी अधिकार रहने का समर्थन कर रहे हैं। वहां के नये प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट ने समस्त बड़े-बड़े व्यवसायों का नियंत्रण आरम्भ भी कर दिया है। अब वहां प्रत्येक कारखाने में उतना ही माल उसी क्रम से तैयार होता है जैसी कि सरकार आज्ञा देती है। अभी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तो यह प्रबन्ध व्यवसाय-संकट और बेकारी की आपत्ति से देश की रक्षा करने के नाम पर किया जा रहा है, पर भविष्य में इस नीति का और भी विस्तार हो सकता है और यह चिरस्थायी हो सकती है। इसलिये इसके परिणाम पर भली प्रकार विचार करना हमारा कर्तव्य है।

अगर वर्तमान पूँजीवादी सरकार उद्योग धन्धों को व्यवसाइयों से खरीद ले तो उसके बदले में दस्तावेज़ लिखकर दे दिये जायँगे। सरकार श्रमजीवियों को जिस प्रकार बन पड़ेगा अधिक से अधिक चूसेगी और जो आमदनी होगी वह सूद के तौर पर पूँजीपतियों को दी जायगी। सरकार सब प्रकार की सामग्री का मूल्य क़ानून द्वारा नियत कर देगी जिससे साधारण दुकानदार चौपट हो जायँगे। कुछ ही समय में समस्त कारबार का संचालन सरकार द्वारा होने लगेगा। पूँजीपतियों की आमदनी वर्तमान समय की भाँति ही बनी रहेगी और साथ ही वे आये दिन के श्रमजीवियों के झगड़ों और व्यवसाय में आनेवाले तरह-तरह के ख़तरों से बच जायँगे।

इस प्रणाली में श्रमजीवी सरकारी नौकर समझे जायँगे और उनको जो थोड़ी सी स्वतंत्रता इस समय प्राप्त है वह भी जाती रहेगी, उनको सेना की भाँति कठोर नियमों में बँधकर रहना पड़ेगा, उनका वेतन क़ानून द्वारा नियत किया जायगा और अपना किसी प्रकार का संगठन भी न कर सकेंगे। उस समय हड़ताल करना राज्य के प्रति विद्रोह करना समझा जायगा।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और उसका दमन सैन्यशक्ति द्वारा किया जायगा। इस समय तो मजदूरों के विरुद्ध सेना भेजने के पूर्व पूंजीपतियों को कोई सच्चा या झूठा गम्भीर कारण दिखलाना भी पड़ता है, पर जब समस्त कारबार का संचालन राज्य द्वारा होगा उस समय ऐसा कोई कारण पेश करना आवश्यकीय न होगा।

उस समय पूँजीवादी प्रणाली के स्थान में जो नई प्रणाली प्रचलित होगी उसका नाम अनेक पूँजीवादी अर्थशास्त्रकारों ने औद्योगिक सामन्त-शासन रखा है। जब पूँजीपति सब प्रकार की जिम्मेदारियों से मुक्त हो जायंगे तो वे भी प्राचीन काल के राजाओं और सरदारों की भाँति अपना समय चित्रकला, संगीत, विज्ञान आदि के अनुशीलन और उन्नति में व्यतीत करने लगेंगे। अतिरिक्त सामग्रो का एक भाग, जो आजकल नवीन व्यवसायों की स्थापना में खर्च होता है ऐसे भव्य तथा कलाकौशलपूर्ण नगरों के निर्माण में व्यय होने लगेगा, जिनकी तुलना के नगर आजतक किसी देश और किसी काल में नहीं बनाये गये। इन शहरों में केवल मालिक ही निवास करेंगे। जिन बड़ी-बड़ी स्थल और जल सेनाओं तथा भीषण अस्त्र-शस्त्रों को आजकल संसार में अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिये प्रस्तुत किया जा रहा है वे उस समय दासों को दबाये रखने के लिये काम आयेंगे। उस ससय निश्चय ही प्राचीन काल के क्षत्रियों की भाँति एक सैनिक जाति का आविर्भाव होगा। इसका संचालन राज्य द्वारा होगा और बहुत सी अतिरिक्त सामग्री उसके द्वारा खर्च हो

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जायगी। यदि श्रमजीवी दल पूँजीपतियों के शासन का अन्त कर सकने में समर्थ न हुआ और वर्तमान संघर्ष में पूँजीवादियों की ही विजय हुई तो उसके परिणाम स्वरूप इस प्रकार के सैनिक-शासन की स्थापना अनिवार्य है।

अगर श्रमजीवियों की विजय हो ?

प्राचीन काल में जितनी क्रान्तियाँ हुई हैं उसमें क्रान्तिकारी वर्ग का उद्देश्य समाज का प्रधान पद प्राप्त करना और एक ऐसी नई प्रणाली की स्थापना करना रहा है जो पहली प्रणाली की अपेक्षा उत्पत्ति के साधनों (modes of Production) के अधिक अनुकूल हो। वर्तमान क्रान्ति में यही उद्देश्य श्रमजीवी दल का है।

पाठकों को स्वभावतः ही यह जानने की उत्सुकता होगी कि यदि वर्तमान संघर्ष में श्रमजीवी दल की विजय हो तो पूँजीवादी के स्थान पर किस प्रकार की प्रणाली की स्थापना होगी ? जब कि सामन्त-शासन का अन्त हुआ तो उसके पूर्व ही प्राचीन प्रणाली के अन्तर्गत पूँजीवाद का सूक्ष्म रूप दिखलाई देने लग गया था। उस युग में व्यवसायीवर्ग छोटे-छोटे कारखानों की स्थापना करके मजदूरी की प्रथा को जन्म दे रहा था और यही भावी सामाजिक प्रणाली का वास्तविक स्वरूप था। क्या इसी प्रकार वर्तमान क्रान्तिकारीवर्ग के आन्दोलन में भावी-सामाजिक प्रणाली का बीज दिखलाई नहीं पड़ सकता ? अगर हम ध्यान-

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पूर्वक निरीक्षण करें तो क्या हम उस पोशाक को नहीं देख सकते जिसे क्रान्तिकारी वर्ग पुरानी पोशाक के बेकार हो जाने पर समाज को पहिनाना चाहता है।

पूँजीवाद के आरम्भ में श्रमजीवियों का ऐसा कोई संगठन न था जिससे वे नौकरी के सम्बन्ध में की जाने वाली पारस्परिक प्रतियोगिता को बन्द कर सकें। उस समय श्रमजीवी केवल व्यक्तिगत हित पर ही दृष्टि रखते थे और जिसे जहां कहीं कोई सुयोग मिलता था वह उसीसे लाभ उठाने की चेष्टा करता था। उनमें किसी प्रकार का सहयोग का भाव न था और अपनी अवस्था में परिवर्तन करा सकने की भी उनमें कुछ भी शक्ति न थी। समस्त क़ानूनों और शासनविधानों का उद्देश्य निजी-जायदाद की स्थिति को मजबूत करना था। कोई व्यक्ति अपनी निजी जायदाद का उपयोग किस प्रकार करता है इस सम्बन्ध में किसी को कुछ भी बोलने का अधिकार न था। अगर कोई मनुष्य उसका उपयोग दूसरे लोगों को चूसने और ठगने में करता था तो कोई उसके काम में हस्तक्षेप नहीं कर सकता था, क्योंकि वह उसकी सम्पति थी और वह उसको जैसे चाहे काम में ला सकता था।

पूँजीवाद की यह अवस्था उस समय थी जब कि भावी सामाजिक प्रणाली का बीज उसके अन्तर्गत दिखलाई नहीं पड़ने लगा था। इसके पश्चात् एक अवसर ऐसा आया जब चन्द व्यक्तियों ने एक जगह बैठकर विचार किया कि अगर एक व्यव-

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

साथ से सम्बन्ध रखनेवाले मजदूर संगठित हो जायें और
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नौकरी के लिये आपस में चढ़ाऊपरी न करें तो उनकी दशा में बहुत सुधार हो सकता है। इन विचारों को लेकर सन् १८३० में सबसे पहले श्रमजीवी-संघ (लेबर यूनियन) की स्थापना की गई। यह देखकर मालिक गुस्से के मारे लाल पीले हो गये। वे कहने लगे कि इन लोगों की इतनी मजाल कि वे हमको मजदूरी और कारख़ाने के प्रबन्ध के सम्बन्ध में आज्ञा दें। हम अपने कारख़ानों के मालिक हैं और क़ानून के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार प्राप्त है कि वह अपनी सम्पत्ति को किसी प्रकार काम में लाये। परिणाम यह हुआ कि मजदूरों को संगठित करने की चेष्टा करनेवाले पकड़ कर अदालत में खड़े किये गये, उनके ऊपर मजदूरी बढ़ाने के लिये 'षडयंत्र' रचने का अभियोग चलाया गया और वे अपराधी ठहराये जाकर दण्डित हुये।

यही सबसे पहला मजदूर-संघ भावी सामाजिक प्रणाली का बीजस्वरूप था। इससे दो बातें प्रकट होती थीं। एक यह कि श्रमजीवी अपने वर्ग के समस्त व्यक्तियों का हितसाधन करने के उद्देश्य से आपस में सहयोग करना चाहते हैं और दूसरी यह कि वे कारख़ानों के प्रबन्ध में कुछ कह सकने का अधिकार चाहते हैं।

धीरे-धीरे श्रमजीवियों का संगठन दृढ़ होता गया और श्रमजीवी-संघों में भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या बढ़ती गई। इसके साथ ही व्यवसाय-सम्बन्धी बातों में उनकी सम्मति का महत्व भी स्वीकार किया जाने लगा। परिणाम यह हुआ कि

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज कदाचित् ही कोई देश ऐसा होगा जहां मजदूर अपनी दशा को सुधारने के लिये मज़दूर आन्दोलन न कर रहे हों और कारखानों के स्वामियों को उनकी माँगों पर थोड़ा बहुत ध्यान न देना पड़ता हो।

आरम्भ में जो मज़दूर-संघ बने थे उनमें केवल एक ही पेशे से सम्बन्ध रखनेवाले लोग सम्मिलित हो सकते थे। क्योंकि उस समय सब तरह की वस्तुओं के बनाने में बड़ी चतुराई की आवश्यकता पड़ती थी। इसलिये उस समय के संघ केवल अपने पेशे से सम्बन्ध रखनेवाले व्यक्तियों को ही सम्मिलित करते थे, उनसे बहुत अधिक फ़ीस लेते थे, बहुत समय तक उनको उम्मेदवार बनाकर रखते थे और इस बात की चेष्टा करते रहते थे कि जहां तक सम्भव हो थोड़े व्यक्ति उनके पेशे का रहस्य जान सकें। उनका उद्देश्य यह था कि इस प्रकार कारीगरों की संख्या थोड़ी रहने से उनकी अधिक पूछ होगी और वे कारखाने वालों से अधिक मज़दूरी वसूल कर सकेंगे। पर इसके पश्चात् ऐसा समय आया जब धीरे-धीरे चतुराई का स्थान मशीन ने ग्रहण कर लिया। जिस काम के करने के लिये पहले बहुत बुद्धि और वर्षों तक शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता पड़ती थी अब मशीन द्वारा कोई भी व्यक्ति उसे दो चार घण्टे में सीख सकता था।

ऐसी अवस्था में पेशे के आधार पर बने हुये मज़दूर-संघों की उपयोगिता नष्ट हो गई और कारीगरी पर से उनका एकाधिपत्य जाता रहा। इसलिये इन संघों को विवश होकर अपनी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्षा के लिये नवीन मार्ग ग्रहण करना पड़ा। अब उनका पृथक्-पृथक् बना रहना उन्हीं के लिये हानिकारक था। इससे उनकी शक्ति क्षीण रहती थी और वे पूंजीपतियों के संगठित आक्रमण से अपनी रक्षा कर सकने में असमर्थ थे। अपना अस्तित्व स्थिर रखने को उनको एक दूसरे की सहायता करना आवश्यक जान पड़ने लगा। अन्त में जब श्रमजीवियों ने संघशक्ति के प्रभाव को भली भांति अनुभव कर लिया और यह भी देख लिया कि कारखानों के मालिक पारस्परिक सहयोग द्वारा ही उनको दबाये हुये हैं तो वे छोटे-छोटे संघों के बजाय विशाल रूप में अपना संगठन करने लगे। यह संगठन का भाव अभी बढ़ता ही जाता है और अन्त में एक प्रकार के व्यवसाय का केवल एक ही संघ शेष रह जायगा। ये समस्त संघ मिल कर एक सर्वप्रधान श्रमजीवी संस्था की सृष्टि करेंगे। यह उद्देश्य कितने ही देशों में अनेक अंशों में सफल भी हो चुका है।

जब श्रमजीवियों की इस प्रकार की संस्था बन जायगी तो उनका भ्रातृभाव का भाव बहुत अधिक बढ़ जायगा। उसके पश्चात् जब तक वर्तमान आर्थिक प्रणाली प्रचलित रहे सहयोग की अधिक वृद्धि कर सकना असम्भव होगा। पर जब श्रमजीवी एक वर्ग के रूप में पूरी तरह से संगठित हो जायँगे तो वे मुफ़्तख़ोरे पूंजीपतियों को सहज ही में अपने ऊपर से हटा सकेंगे और इस प्रकार उद्योग-धन्धों का संचालन भी सहयोग के सिद्धान्त के अनुसार किया जा सकेगा।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब श्रमजीवियों का संगठन इतना शक्तिशाली हो जायगा तो वे अपनी शक्ति को भली प्रकार अनुभव करने लगेंगे और उद्योग-धन्धों के संचालन में क्रमशः अधिक अधिकार माँगते जायंगे। अन्त में उत्पत्ति और बँटवारे के समस्त साधन उन्हीं के हाथ में आ जायँगे। श्रमजीवियों को जिस प्रकार उस व्यवसाय का संचालन करने का अधिकार है जिसमें वे काम करते हैं उसी प्रकार उनको अपने देश पर भी शासन करने का अधिकार है। इसके पूर्व स्वतंत्रता-प्रेमी व्यक्ति उन राजाओं और सरदारों पर, जो देश पर शासन करना अपना दैवी अधिकार बतलाते थे, विजय प्राप्त करके प्रजासत्तात्मक शासन की स्थापना कर चुके हैं। उसी प्रकार अब मजदूर भी एक ऐसे दल पर, जो सम्पत्ति पर अधिकार रखना अपना दैवी स्वत्व बतलाता है, विजय प्राप्त करके व्यावसायिक प्रजासत्ता की स्थापना करेंगे।

इस प्रकार हम वर्तमान श्रमजीवी आन्दोलन में भावी सामाजिक प्रणाली का बीज स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। यह बीज जहां तक सम्भव होगा वर्तमान पूंजीवादी प्रणाली के आवरण के भीतर विकसित होता रहेगा। जब उसकी गति रुक जायगी तो वह उसी प्रकार आवरण को तोड़ कर बाहर निकल आयेगा जिस प्रकार अण्डे को तोड़ कर बच्चा बाहर आता है।

इस क्रान्ति के फल से राजनीतिक शासन का अन्त हो जायगा और उसके स्थान पर व्यवसायिक शासन प्रचलित होगा। क्योंकि राजनीतिक शासन की आवश्यकता तभी तक

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

रहती है जब तक समाज विभिन्न प्रकार विरोधी दलों या वर्गों Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri में बँटा रहता है और एक वर्ग को दूसरे वर्ग के आधीन रहना पड़ता है तथा इन दोनों में कलह होती रहती है। पर जब श्रमजीवी राजनीतिक शासन पर अधिकार करके उसकी सहायता से पूँजीवादी वर्ग का अन्त कर देंगे तो फिर समाज को उसकी आवश्यकता ही नहीं रह जायगी। जैसे-जैसे समाज सहयोग और साम्यवाद के आधार पर संगठित होता जायगा वैसे-वैसे ही अदालतों, पुलिस, सेना, क़ानून बनानेवाली व्यवस्थापक सभा और जेलखानों की आवश्यकता मिटती जायगी और अन्त में उनका चिन्ह भी शेष न रहेगा। इस प्रकार भविष्य की गवर्नमेण्ट राजनीतिक के बजाय व्यवसायिक होगी और वह मनुष्यों के बजाय जीवन-निर्वाह की सामग्री का शासन करेगी।

आजकल के श्रमजीवी-संघों का अवलोकन करके हम भावी सरकार के स्वरूप का बहुत कुछ अनुमान कर सकते हैं। वर्तमान समय में जिस प्रकार किसी राष्ट्र की शासन सभा के सदस्यों का चुनाव देश के भौगोलिक विभागों अथवा प्रान्तों के आधार पर होता है और वह शासन सभा देशनिवासियों के कार्यों का नियंत्रण करने के उद्देश्य से क़ानून बनाती रहती है उसी प्रकार भविष्य की शासन सभा के सदस्य विभिन्न पेशों और उद्योग धन्धों के प्रतिनिधि होंगे और वे लोग जीवन-निर्वाह की सामग्री की उत्पत्ति और व्यय को नियंत्रण में रखने के लिये नियम बनाया

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करेंगे। हम देख चुके हैं कि आरम्भ में जब कितने ही पृथक् पृथक् फ़िर्क़ों का एक संघ स्थापित होकर राष्ट्र की स्थापना की गई थी तो केन्द्रीय शासन-सभा के सदस्यों का चुनाव फ़िर्क़ों के प्रतिनिधित्व के आधार पर होता था। पर जब फ़िर्क़ों का अस्तित्व मिट गया तो शासनकर्ताओं का चुनाव भौगोलिक आधार पर होने लगा। आजकल संसार में भौगोलिक विभागों के अनुसार ही चुनाव होता है। पर जब देश भर के श्रमजीवी एक सूत्र में बँध जायँगे तो भौगोलिक विभागों की उपयोगिता नष्ट हो जायगी और इनके स्थान पर व्यवसायिक विभागों का प्रचार होगा। उस अवस्था में यद्यपि देशभर के श्रमजीवियों का स्वार्थ एक ही होगा पर प्रत्येक व्यवसाय की दशा में कुछ अन्तर रहेगा और इसलिये केन्द्रीय सरकार में प्रत्येक व्यवसाय के पृथक्-पृथक् प्रतिनिधि रहेंगे।

इस प्रकार श्रमजीवियों की विजय होने से वर्तमान पूँजीवादी शासन के स्थान में एक व्यवसायिक अथवा औद्योगिक प्रजातंत्र की स्थापना होगी। उस शासन में श्रमजीवी जो कुछ उत्पन्न करेंगे उसे स्वयं ही खर्च कर डालेंगे। उस समय अतिरिक्त सामग्री बचेगी ही नहीं जिसको बेचने की विदेशों में चेष्टा की जाय और इसके लिये दूसरों से लड़ाई झगड़ा किया जाय। तब समाज की दशा फिर एक बार उत्पत्ति के साधनों और जीवन-निर्वाह की नवीन अवस्था के अनुकूल हो जायगी।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सातवाँ अध्याय

मानवीय प्रकृति और सहयोग

कितने ही लोगों का कहना है कि मनुष्य स्वभाव को देखते हुये साम्यवाद का सफल हो सकना असम्भव जान पड़ता है। और तो क्या हर्बर्ट स्पेन्सर जैसे सुप्रसिद्ध विकासवादी ने एक स्थान पर लिखा है कि "स्वार्थी और दोषपूर्ण मनुष्यों द्वारा एक निर्दोष समाज की रचना हो सकना सम्भव नहीं है।" स्पेन्सर के कथन का आशय यह है कि मनुष्य ऐसी किसी सामाजिक प्रणाली की स्थापना कर सकने में असमर्थ है जिसमें जीवन निर्वाह की सामग्री उत्पन्न करनेवाली मशीनों का अधिकार और प्रबन्ध पंचायत के हाथ में रहे। यह कथन एक विकासवादी के लिये जो यह मानता है कि सृष्टि का आरम्भ अत्यन्त सूक्ष्म कीड़ों से हुआ है और वही कीड़े उन्नति करते करते बुद्धिमान मनुष्यों के रूप में परिवर्तित हो गये हैं, अत्यन्त विचित्र जान पड़ता है। जब हम प्राचीन काल के उन जङ्गली मनुष्यों की अवस्था पर विचार करते हैं जो पशुओं से किसी बात में उन्नत न थे, तो यह बात सर्वथा असम्भव जान पड़ती है कि वे जङ्गली उन्नति करते करते सब प्रकार से सभ्य और कला तथा विज्ञान में निपुण बन सकते थे। पर इस बात की सचाई को आज हम अपनी आंखों से देख रहे हैं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सच है कि वर्तमान समय के मनुष्य स्वार्थी हैं और उनमें अनेक प्रकार के अवगुण पाये जाते हैं, पर इसका कारण यही है कि उनको वर्तमान समय के दोषपूर्ण समाज में रहना पड़ता है, जिसमें स्वार्थ पर दृष्टि रखे बिना मनुष्य का जीवन-निर्वाह हो ही नहीं सकता। इस काल में व्यक्ति का स्वार्थ समष्टि (समाज) के स्वार्थ का विरोधी हो रहा है। पर औद्योगिक प्रजातंत्र में व्यक्ति और समाज का स्वार्थ एक ही होगा और उस दशा में मनुष्यों का स्वभाव भी उसी के अनुसार बन जायगा। जिस प्रकार पिछले युगों में सामाजिक प्रणाली में परिवर्तन होने से मनुष्य के स्वभाव में उसके अनुकूल परिवर्तन होता रहा है वैसा ही भावी परिवर्तन के समय भी होगा।

विजय किस दल की होगी ?

अगर वर्तमान वर्ग-कलह में श्रमजीवियों की विजय होगी तो उसके फलस्वरूप औद्योगिक प्रजातंत्र शासन की स्थापना होगी। अगर पूँजीवादी वर्ग की विजय हुई तो उसका परिणाम औद्योगिक एकतंत्र शासन होगा। यह तो समय ही बतलायेगा कि इस संग्राम में अन्तिम विजय किसकी होगी पर साम्यवादियों का विश्वास है कि विकासवाद के नियमानुसार सफलता उन्हीं को प्राप्त होनी चाहिये। इसके लिये वे नीचे लिखी दलीलें पेश करते हैं :—

१—ऐतिहासिक दृष्टि से श्रमजीवियों की विजय का समय

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अब समीप आ पहुँचा है। प्राचीन काल में यदि किसी देश के श्रमजीवी पूँजीवादियों पर विजय प्राप्त कर भी लेते थे तो विदेशी राष्ट्र सैन्य-शक्ति द्वारा उनको कुचल डालते थे। सन् १८७१ में फ्रांस के श्रमजीवी शासन का यही परिणाम हुआ था। पर अब संसार के प्राय: सभी देशों में पूँजीवाद का प्रचार हो गया है और कल कारख़ानों द्वारा माल बनाया जाता है। इसलिये अब यदि पूँजीवाद का उच्छेद होगा तो सभी देशों में होगा और तब श्रमजीवियों को दबाने लायक कोई बाहरी शक्ति शेष न रहेगी।

२—विकासवाद के सिद्धान्तानुसार भविष्य में समाज का संगठन इस प्रकार का होना चाहिये जिससे वह आधुनिक विशालकाय मशीनों का उपयोग कर सके। औद्योगिक प्रजातंत्र में समाज अत्यन्त पेचीदा मशीनों का उपयोग कर सकने में भी समर्थ हो सकेगा, पर सैनिक शासन की अवस्था में समाज आधुनिक औद्योगिक पद्धति के अनुसार काम न कर सकेगा।

३—प्राचीन काल में जितनी नवीन सामाजिक प्रणालियों का अभ्युत्थान हुआ था उनमें से प्रत्येक ने उत्पत्ति के परिमाण को बढ़ाया था। जातिगत कम्यूनिज़्म (Tribal Communism) के फलस्वरूप समाज में श्रम-विभाग का श्रीगणेश हुआ और लोग अग्नि और पत्थर के हथियारों से काम लेने लगे, जिसके फल से पैदावार बढ़ गई। दासत्व प्रथा में उत्पत्ति की और भी अधिक वृद्धि हुई। सामन्त-शासन में दस्तकारी को उन्नति की चरम सीमा तक पहुंचा दिया गया और इससे पैदावार बहुत
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बढ़ी। इसी प्रकार वर्तमान समय में पूंजीवादी पद्धति ने जिन विशाल ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियों और भीमकाय मशीनों को जन्म दिया है उनसे पैदावार की अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

इन प्राचीन सामाजिक प्रणालियों के फल पर दृष्टि रखते हुये हमको वाध्य होकर इस निर्णय पर पहुंचना पड़ता है कि विकासवाद के सिद्धान्तानुसार भावी सामाजिक प्रणाली वही हो सकती है जिसके द्वारा उत्पत्ति की और भी अधिक वृद्धि हो। निरंकुशपूर्ण सैनिक-शासन के फल से उत्पत्ति का परिमाण निस्सन्देह वर्तमान समय की अपेक्षा घट जायगा। जो देश अभी तक उद्योग-धन्धों में पिछड़े हुये हैं अथवा संगठन की कमी से जो यथेष्ट उन्नति नहीं कर सकते वे इस प्रकार के उपाय से भले ही थोड़े समय तक सफलता प्राप्त कर सकें, पर जो देश कला-कौशल में पूर्ण रूप से उन्नति कर चुके हैं वे इस प्रकार के शासन के फल से अवश्य ही अवनति को प्राप्त हो जायँगे। पर औद्योगिक प्रजातंत्र में पारस्परिक प्रतियोगिता के कारण होनेवाली हानि रुक जायगी और प्रत्येक व्यक्ति को काम करना पड़ेगा, जिसके फल से उत्पत्ति अवश्य ही बढ़ जायगी। इस दृष्टि से भी विकासवाद के सिद्धान्तों के अनुसार श्रमजीवियों की ही विजय होनी चाहिये।

४—अब तक मनुष्य-समाज ने जब कभी आगे की तरफ़ क़दम बढ़ाया है, उसके फल से पारस्परिक सहयोग की वृद्धि होती गई है। अपनी आदिम अवस्था में मनुष्य घोर जङ्गली था

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और केवल व्यक्तिगत सुख-दुःख का ही ख्याल रखता था। इस अवस्था से निकल कर जब मनुष्य ने पहला क़दम बढ़ाया तो उसके फल से फिर्कें की उत्पत्ति हुई। फिर्का ही मानवीय सहयोग की सबसे पहली सीढ़ी है। जब राष्ट्र की उत्पत्ति हुई तो सहयोग की और वृद्धि हुई। इसी प्रकार श्रम-विभाग (Division of Labour) मजदूर-संघ, ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनी आदि मानवीय-सहयोग की क्रमशः वृद्धि की सीढ़ियाँ हैं। वर्तमान समय में व्यवसाय के संचालन के लिये जिन ट्रस्टों और देशव्यापी मजदूर संघों का उदय हो रहा है उनका उद्देश्य व्यवसाय सम्बन्धी प्रतियोगिता को मिटा कर सहयोग की स्थापना करना ही है। अब मजदूर संघों का उद्देश्य केवल अपने ऊपर होनेवाले अन्यायों से अपनी रक्षा करना ही नहीं है वरन् वे कारख़ाने के संचालन में सहयोग करना भी अपना अधिकार समझते हैं और किसी हद तक उनका यह उद्देश्य सफल भी हो रहा है। इसके पश्चात् वे कारख़ानों को सार्वजनिक सम्पत्ति बनाने की चेष्टा करेंगे। उस समय समस्त मशीनों के मालिक वे मजदूर ही समझे जाएँगे जो उन पर काम करते हैं। इसके फलस्वरूप मजदूरों का सबसे बड़ा संगठन औद्योगिक संघ और पूंजीपतियों का सब से बड़ा संगठन ट्रस्ट सम्मिलित होकर एक रूप में परिणित हो जायँगे और यह सम्मिलन सहयोग की चरमोन्नति का निदर्शक होगा।

इसके विपरीत सैनिक शासन सहयोग का विरोधी होगा और उससे संसार के विभिन्न भागों तथा जनता के पृथक पृथक

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दलों में एकता के बजाय शत्रुता की वृद्धि होगी। इसलिये वह मनुष्य-समाज के स्वाभाविक विकास के प्रतिकूल होगा। इस प्रकार स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि आगामी आर्थिक-संग्राम में श्रमजीवियों की विजय होने से ही विकास की गति अक्षुण्ण रह सकती है और मानवीय सहयोग की वृद्धि हो सकती है।

जब पूँजीवादियों ने सामन्त-शासन की जड़ उखाड़ कर फेंकी थी तो वे समझते थे कि वे जिस सामाजिक प्रणाली का प्रचार कर रहे हैं वह सब प्रकार से त्रुटिहीन और सर्वाङ्गपूर्ण है। आज भी स्कूलों में बच्चों को यही बतलाया जाता है कि वर्तमान सामाजिक प्रणाली आदर्श है। पर साम्यवादी यह मानने को तैयार नहीं हैं कि मनुष्य समाज की वर्तमान अवस्था विकास का अन्तिम स्वरूप है। वे यह भी नहीं कहते कि जब संसार में साम्यवाद का प्रचार हो जायगा और मनुष्य प्रतियोगिता के बजाय सहयोग पूर्वक जीवन-निर्वाह करने लगेंगे तो परिवर्तन का चक्र रुक जायगा। इसके विपरीत उनका ख्याल यह है कि अब तक जितनी सामाजिक प्रणालियाँ संसार में प्रचलित हुई हैं उन सब में मनुष्य को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये सदैव युद्धों और पारस्परिक कलह में लगा रहना पड़ा है और इसलिये उन्नति की गति अत्यन्त धीमी रही है। पर जब मनुष्य को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये अन्य मनुष्यों से लड़ने की आवश्यकता न रहेगी, जब उसको जीवन-निर्वाह के लिये सदैव चिन्तित न रहना पड़ेगा और जब वर्तमान

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय से भी प्रचुर मशीनों का आविष्कार होकर मनुष्य की दैहिक आवश्यकताओं की समस्या सदैव के लिये हल हो जायगी तो मानवीय उन्नति का एक नया युग आरम्भ होगा । हम नहीं कह सकते कि उस युग में मनुष्य जाति कहाँ तक उन्नति कर सकेगी । पत्थर के हथियारों से काम लेने वाले आदिकालीन मनुष्य और वर्तमान काल के सभ्य मनुष्य में जितना अन्तर है सम्भव है आजकल के मनुष्य से भविष्य के मनुष्य में उससे भी अधिक अन्तर हो । यद्यपि हम भावी घटनाओं का स्वरूप ठीक-ठीक जान सकने में असमर्थ हैं पर इतना कह सकना कठिन नहीं है कि भूतकाल की अन्य सामाजिक प्रणालियों की भाँति वर्तमान पूँजीवादी प्रणाली को भी थोड़े बहुत वर्षों में समाप्त होना पड़ेगा और इसका स्थान औद्योगिक-प्रजातंत्र-प्रणाली लेगी ।

यह समझ लेना चाहिये कि प्राकृतिक नियमों के अनुसार पूँजीवादी प्रणाली का अन्त होना अवश्यम्भावी है और इसलिये उसकी रक्षा की चाहे जितनी चेष्टा क्यों न की जाय व्यर्थ है । जब कि पूँजीवाद की वृद्धि हो सकनी असम्भव हो जायगी और अतिरिक्त सामग्री की बिक्री के लिये कहीं गुंजायश न रहेगी (जैसा कि आजकल देखने में आ रहा है) तो इस प्रणाली को समाप्त होना ही पड़ेगा ।

इसी प्रकार जो लोग यह कल्पना कर रहे हैं कि पूंजीपतियों और श्रमजीवियों में एकता की वृद्धि करके इस प्रणाली का

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सुधार किया जाय और इसे अधिक श्रेष्ठ बनाया जाय वे भी अपना समय व्यर्थ में बर्बाद कर रहे हैं। क्योंकि इन दोनों दलों का भेद दिन पर दिन बढ़ता ही जाता है और यह प्रत्यक्ष होता जाता है कि उनका हित परस्पर विरोधी है। यह बात सुनने में चाहे कितनी भी कड़वी क्यों न जान पड़े पर इसकी सचाई हमको बाध्य होकर माननी ही पड़ती है। इन दोनों दलों में एकता पैदा करने की चेष्टा तेल और पानी को मिलाने की चेष्टा के समान निरर्थक है। इस कलह का अन्त तभी होगा जब संसार में केवल एक ही दल शेष रह जायगा और सब लोग किसी तरह के उपयोगी परिश्रम द्वारा अपना जीवन-निर्वाह करने लगेंगे।

इति

मुद्रक—पं० बद्रीप्रसाद पाण्डेय, नारायण प्रेस, प्रयाग।
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.